

४



# ରିଦେହ ୪୩୪



ରିଦେହ ଯେଥିନି ସାହିତ୍ୟ ଶ୍ରୀମନ୍ଦୋନନ: ମାନ୍ୟଶ୍ରୀମିତ୍ତ ସଂସ୍କୃତାତ୍ମ



ସମ୍ପାଦକ: ଗଜେନ୍ଦ୍ର ଠାକୁର।



नगमे छुहि आ जत॒ बचनाकाब/ संप्रवेकर्त्ताक नाम ने खड्डि तत॒ ङ्र संपादकाधीन खड्डि/ सम्पादक: रिदेह ङ्र-प्रकाशित बचनाक रेख-आर्काङ्गर/ धीम-आधावित रेख-आर्काङ्गरक निर्माणक अधिकाव, ए सत आर्काङ्गरक खबराद आ निर्पातवण आ तकवो रेख-आर्काङ्गरक निर्माणक अधिकाव; आ ए सत आर्काङ्गरक ङ्र-प्रकाशन/ प्रिण्ट-प्रकाशनक अधिकाव बवेथ छुथि/ ए सत नेन कोनो बायन्टी/ पाविश्रमिकक प्रारधान ने छे, से बायन्टी/ पाविश्रमिकक ङ्रक बचनाकाब/ संप्रवेकर्त्ता रिदेहसँ ने ङ्रडुथु/ रिदेह ङ्र पत्रिकाक मासमे दू ठा खँक निकलेत खड्डि जे मासक ०९ आ १७ तिथिके [www.vidaha.co.in](http://www.vidaha.co.in) पव ङ्र प्रकाशित कएन जागत खड्डि।

Font/ Keyboard Source: <https://fonts.google.com/> , <https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts> , <https://keyman.com/>

*These are print-on-demand books, send your queries to [editorial.staff.vidaha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.vidaha@zohomail.in). The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, [sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com)], send your queries to [sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com). The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2224-547X VIDEHA are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.*

© Preeti Thakur ([sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com)) Cover design: AUM GAJENDRA THAKUR

VIDEHA:434



समानात्रव पबम्पबाक रिष्ठापति- चिऒ रिदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलान मठन द्वावा।

*मेथिनी भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् / हवमत्रः ङ्रङ्गान- मावशीमिते सँस्रताम्।*

**खब्रङ्गम**

রিদেহ ৪৩৪ ম ঞ্ক ১৭ জনরবী ২০২৬ (রর্ষ ১৮ মাস ২১৭ ঞ্ক  
৪৩৪)

ঐ ঞ্কমে ঞ্ঠি:-

১.১. ঞ্ক ৪৩৩ পব ঞ্ঠিপ্পলী

গত্

২.১. কন্পনা মা-মৈথিনী সাহিহমে ঞ্পেন্দব নাথ মা 'রাস' ঐর  
ঞনক পবিরাবক যোগদান -২১

২.২. হিতনাথ মা-মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা ঐর ঞনক  
পবিরাবক যোগদান-১৩

২.৩. নানদের কামত- ঞ্ঠয় পাত্রকে বচনাকাব

২.৪. শ্রীচার্য্য বামানন্দ মণ্ডন- জননাযক কর্পূবী ঠাঙ্কব

২.৩. পবমানন্দ নান কর্প-সীখ

২.৬. মনোজ মা ম্বজি- কথা-নহ কেশ

পত্ৰ

৩.১. জগদানন্দ মা মন্ - রীসঠা হোণহ

৩.২. বরীন্দ্রব নাবাষণ মিশ্র-রীসবি জাএরঁ জকবী ঙ্ঠে

৩.৩. মন্না জী- শ্বকরিতা- উঘাক মাপনকেঁ!

*Maithili Literature in English Translation*

*4.1.Changing Thoughts, Diminishing Hope-Jagdish  
Prasad Mandal (Original Maithili Short Story)  
Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)*



## ১.১. ঐক ৪২২ পব ঠিপ্পপলী

প্রিয় সম্পাদকজী,

সনাতন ধর্ম পব শ্রী হিতনাথ ম্মা দুাবা নিখিত-সঁকনিত ঞনগ-  
 ঞনগ নেখক কে নেখ পড়নম্মঁ জাহি মেঁ সনাতন ধর্ম, তকব রর্ণ-  
 রারস্থা কে রীসরী সদি কে পূর্বাদ্ মেঁ তকোনীন নেখক স-  
 উদাহবণ সঁক্ষিপ্ত রাখ্যা কবএ কে প্রযনে কএন গেন বহনি /  
 কৌহহনরশ হিতনাথ রাঁরুঁ সঁ সঁক্ষিপ্ত রার্ভা সেহো কএনম্মঁ /  
 যত্ৰপি হমব পীঠী কেঁ সনাতন কে নে তঁ শিষ্ণা দেন গেন ঞছি,  
 নে কোনোঁ শাস্ত্র পড়াওন গেন ঞছি ঞা নাহিঁ ও রিশান রিষয-  
 রাস্ত্র কে সম্বচিত চ্চান ঞছি তথাপি এহি ধর্ম কে ৭২ রর্ষ সঁ সূর্য  
 ঞ্চাবণ ক বহন ছী ঞা ঞপন সঁপর্ক মেঁ নাখোঁ সনাতনী কেঁ  
 সেহো দেখন ঞরি বহন ছী / হমব রিচাব ঞছি জে কনিয়গ কে  
 ঞ্চাধনিক পবিপেঞ্চ মেঁ রর্ণ-রারস্থা কে সমীষ্ণা ঞহারশ্ঠক ঞছি

/ जनसंख्या रिसुफोष्ट आ भावतीय संरिधान दुवा प्रदत्त  
आवङ्गण रारस्था मेँ योगाता के भ बहन अरहेनना मेँ जेकवा  
जे तबह के जीरिका भेष्ट बहन अछि / एहि सँ अनेकेँ रूबाङ्गण  
शूद्रकर्म र शूद्र आध्यामिक कार्य क बहन अछि जाहि सँ प्वातन  
कर्म पङ्गति तर्क-बहित भ गेन अछि / गहो देखे मेँ आरि बहन  
अछि जे एकहि राजि रर्ण-रारस्था के अग्याय कार्य क बहन  
अछि / अतएर सनातन आ ओहि मेँ रर्ण-रारस्था के  
आधुनिकीकरण अनिरार्य भ गेन अछि / हब सनातनी केँ धर्म  
के एक मून प्राकप रिठानय पाठ्यक्रम मेँ अरथु होरए चाली /  
आङ्कक अग मेँ रँठि बहन कञ्चबराद मेँ मात्र सनातन एक एहन  
धर्म अछि जे समारेशी अछि आ 'सर्रदेराः' केँ मानैत छैक /  
समग्र रिशु मेँ धार्मिक रैमनस्यता केँ समाप्त कबए मेँ  
सनातनी मानसिकता के अरथुकता अछि /

**सप्रेम**

ଡା ରୀ. ଏନ. ଲା

ସ୍ୱପନ      ଯିତରା [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) ପବ

ପଠାଓ ।

୨.୧. କନ୍ଧନା ମା-ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ମା 'ରାସ' ଏହି

ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ -୨୧

୨.୨. ହିତନାଥ ମା-ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ତାବାନାଥ ମା ଏହି ଜ୍ଞାନକ

ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ-୧୩

୨.୩. ନାନଦେର କାମତ- ଅଧ୍ୟାୟ ପାତ୍ରକେ ବଚନାକାବ

୨.୫. ଅଧ୍ୟାୟ ବାମାନନ୍ଦ ମଣ୍ଡନ- ଜନନାୟକ କର୍ପୁରୀ ଠାକୁର

୨.୬. ପବମାନନ୍ଦ ନାନ କର୍ଣ୍ଣ-ସୀଧ

୨.୭. ମନୋଜ ମା ସ୍ଵଜି- କଥା-ନହ କେଶ

୨.୧.କନ୍ପନା ମା-ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ମା 'ରାସ' ଏ଼  
ମାନକ ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ -୨୧



କନ୍ପନା ମା

ଆମ୍ବେକଥା ନିଖରାକ ଅପୂର୍ଣ୍ଣ ଗଢ଼ା

"ଅଗ୍ରିମ ଯୋଜନା ଅଢ଼ି ଆମ୍ବେକଥା ନିଖରାକ। ଅପନ ଆମ୍ବେକଥା

निखरँ; निष्ठित निखरँ... घब-पविरावक.. नोक सभक आग्रह कि  
दवाग्रह जे कहल जाए, से छनि... आरँ आशुबक जे द्रपा!"

आ पूजा 'र्यास' जीक मुखारिन्द सँ निकनन शैङ्ग छनि। म्दा से  
आ आछा अपूर्णे बहि गेननि म्दानकव। मामा, श्री सहेन्दव क्माव  
मा (मोहन जी) सँ गप्प भेन एहि सँदर्भ मे। तँ ओ कहनि,  
"रारू केँ जखन-जखन कहिअनि, "Autobiography निखरँक चाही  
अहाँ केँ।" तखन म्दानकव कहेरँ बठेत छनि,  
"Autobiography रँडका नोक, मतनरँ महान नोक सभ निखेत  
छथि, हम तेहन रिशिष्ठ नोक नहि। आमेकथा ओ ने निखेत  
अछि, जनिकव जीरन-यात्रा सँ नोक प्रेवित भ' सकथि। जेना  
नेन्सन मँडेना, महात्मा गँधी, रँबाक ओरँमा सन नोक  
निखनि।" म्दा भीतव आछा छनि आमेकथा निखरँक, से  
रूमागत छनि पविरावक नोक सभ केँ। जीरन तँ रँमात  
सँघर्षपूर्ण बहननि 'र्यास' जीक। म्दानकव जीरन-यात्रा सँ रँमातो

নোক প্রেবিত ভ' সকেঁত ছনএ। ওনা *Autobiography* নিখরাঁ মে  
সমস্যা তঁ ছেঁ। স্বপন ঔপনর্ষিক চর্চা সূর্য কবিতথি তঁ নোক  
"স্বাম্বেম্বথতা" রা "স্বাম্বেগৌবর"ক স্বধীন রুঁমি সকেঁত ছননি।

"স্বাম্বেকথা একঠা সাহিত্যিক রিধা স্বষ্টি জাতি মে কোনো রাজি  
স্বপন জীরনক ঔতাব-চড়ার, স্বপন সফনতা-স্বসফনতাক  
নেখা-জোখা কেঁ সূর্য পোখী কপ মে নিখি সার্বজনিক কবেঁত  
স্বষ্টি" সে কতেক পাঠক গু রাত রুঁমিতনি, কে জানএ...। কতন্ন  
নে কতন্ন 'রাস' জীক মোন সশঁকিত ছননি প্রাযঃ। স্বা তেঁ  
মেথিনী সাহিত্য জগতক স্বপ্রসিদ্ধ রাজির বহিতন্ন ও সহাস নহি  
কএননি স্বাম্বেকথা নিখরাঁক। জখন কি স্বপন রিচাব স্বা স্বব্ভর  
সঁ নোক কেঁ স্বরগত কবরাঁওন জাএ, সে গছা রঁনরতী ছননি  
ন্ননকা ভীতব। খেব, *Autobiography* নহি *biography* তঁ নিখন  
জা সকেঁত স্বষ্টি। নোক 'রাস' জীক জীরন-যাত্রা সঁ রঁন্নত কিছু  
সীথি সকেঁত ছথি। সএহ সোচি হম এহি কাজ মে নগনন্ন স্বষ্টি।

କତେକ-କୀ ନିଧି ସକନମ୍ନ, ସେ ତଁ ପ୍ରକାଶନକ ଓପବାନ୍ନାହି ସ୍ପଞ୍ଜ  
ହୋଏତ/ ନୋକକ ପ୍ରତିକ୍ରିୟା ସଁ/ ଶ୍ଵରତାବୀ ପ୍ରକ୍ଷ 'ରାସ' ଜୀକ  
ଜୀରନୀ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ, ହେମ ନ୍ନକବ ରିବାଠି ରାଜିରକ ଚିତ୍ରଣ କବରୀକ ଘମ  
ମେ କତେକ ସହନ ବହନମ୍ନ, ହେମବ ନିଧନ କତେକ ଶ୍ଵାସର୍ଗତ ଶ୍ଵତି, ସେ  
ତଁ ପୋର୍ଥୀକ ପ୍ରକାଶନକ ଓପବାନ୍ନାହି ସ୍ପଞ୍ଜ ହୋଏତ/ ପ୍ରୟାସ ତଁ ପୂବା  
ବହନ ଶ୍ଵତି, ଜେ ହେମବା ଦ୍ଵାବା ଏକକମ୍ନ ଠା ଶୈଳକ ଚ୍ୟନ ଏହେନ ନାହି  
ନ୍ନଶ୍ଵଏ, ଜେ ନ୍ନକବ ମାନ-ମର୍ଦନ କବୈତ ସନ ପ୍ରତୀତ ହୋଏନ ପାଠକ  
କୈ/ ସର୍ଥାଧି ଚିତ୍ରଣ କବୀ ଏହି ମିଧିନା ରିହତିକ ରାଜିରକ, ସେ  
ପ୍ରୟାସ ବହନ ହେମବ/

ଓପର୍ଯ୍ୟଜ ପୈବାଗ୍ରାହ ମେ ହେମ 'ରାସ' ଜୀ କୈ 'ଶ୍ଵରତାବୀ ପ୍ରକ୍ଷ'କ  
ଓପାଧି ଦେନିଶ୍ଵାନି ଶ୍ଵତି, ସେ ଏକବା ଶ୍ଵତିଶୈଯୋଜି କପ ମେ ନାହି ନେନ  
ଜାଏ/ କିନ୍ତୁ-ନେ-କିନ୍ତୁ ରାନ୍ତରିକତା ତଁ ନିଶ୍ଚିତ ରୁମନା ଜାଗତ ଶ୍ଵତି  
ଏହି ତଥା ମେ, ଜେ ଓ ସାମାନ୍ୟ ପ୍ରକ୍ଷ ନାହି ହୁନାହ/ ଏହେନ ହେମଲୀ ଠା  
ନାହି, ରୁମନାତ ନୋକକ ମୁହୈ ସ୍ଵନନ ଶ୍ଵତି ହେମବା/ ଏହି ତବହେକ ପ୍ରତିଭା

সামান্য মন্বকথ মে কলৈঁ দেখাওত শ্ৰুতি/ জালী কাজ মে হাথ  
 নগৌননি, জালী ঞ্চেএ মে জে কাজ কএননি, সভঠাম স্ননকব  
 নোহা মাননকনি নোক/ মতনরঁ কর্মঞেএ স্নশ্বএ কি সাহিত্যিক  
 জগত, শ্বা কি শ্বয় সামাজিক গতিরিধি, সভঠাম খুঁষ্টা গাড়ননি/  
 একঠা জঁজীনিয়ব কপ মে, একঠা সাহিত্যিকাব কপ মে, একঠা  
 সঁরেদনশীল মানরক কপ মে, সভ কপ মে সভঠাম সমাদৃত  
 ভেনাহ/ শ্বরতাবী প্বকষ কহরঁক পাঠাঁ একঠা কাবণ সেহো  
 শ্ৰুতি/

'রাস' জীক নানা ভনখিন রঁড়কা ভাবী তাঁত্রিক/ উচৈঠ  
 ভগরতীক শ্বনয় উপাসক/ শ্বানন্দী দেৱী, মানে 'রাস' জীক  
 মাএক, হিনকা সঁ পহিনে পাঁচ-ভুও ঠা সঁতান জন্ম হোওতহি  
 মৃয়ে প্ৰাপ্ত কবেত গেননি/ রঁস্নত করুঁনা-পাতী, ঠোনা-  
 ঠোঁঠকাক উপবান্ন এহি শ্বদ্ভুত প্ৰতিভাশীলী নেনাক প্ৰাপ্তি ভেন  
 ভননি, শ্বানন্দী দেৱী কেঁ/ স্নাভারিকে একঠা পিতা, শ্বপন প্বত্রীক

ସୁସ୍ଥ, ଦୀର୍ଘାୟ ସନ୍ତାନ ନେନ କିଛି ରିଶେଷ ପୂଜା-ଅର୍ଚନା-  
 ତପ, କଏନାହି ଢନ ହେତାହ/ ଏହେନ ଅନ୍ବମାନ ନଗରୈତ ଅଞ୍ଚି ନୋକ/  
 ଏତେକ ଶ୍ବରାନ ରାଜି ରିବନେ ଦେଖନ ଜାଞ୍ଜତ ଅଞ୍ଚି ସମାଜ ମେ, ତେଁ  
 ଏହି ତବତକ ଅନ୍ବମାନ ନଗଏରାଁ ନେନ ରାଠା ହୋଞ୍ଜତ ଅଞ୍ଚି ନୋକ/  
 ସତେନଶୀନତା, ଦୈର୍ଘ୍ୟ, କର୍ମଠତା, ଜ୍ଞାନକବ ଅନ୍ବଶାସିତ ଜୀରନ, ଦୃଢ଼  
 ସଂକନ୍ପ, ସତ କିଛି ସାମାନ୍ୟ ଧ୍ବକ୍ଷ ସଂ ରଞ୍ଜତ ଓଢ଼ ଯୁବକ ବହେନି/ ଆ  
 ସେ ଆଜୀରନ ବହେନି/ କିଛି ଦୈରୀୟ ଶୈଞ୍ଜି ଢନି ପ୍ରାୟଃ/ କିରା  
 ଭଗରତୀକ ଅନ୍ବନ୍ୟ ଭଞ୍ଜ/ଓପାସକ ଢନାହ, ତାହି ଭଞ୍ଜିକ ଶୈଞ୍ଜି ପ୍ରତାପେଁ  
 ଅସମ୍ଭରୋ କେ ସମ୍ଭର କ' ନୈତ ଢନାହ/ ଅନ୍ବବାୟୋ ସଂ ଭଞ୍ଜିଭାର  
 ଢନି ଭଗରତୀ ନେନ/ ଦେଖାରଠୀ ରିନା ନାହି/ ଦେରୀ ଭାଗରତକ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ  
 ପାଠ ଦୃ ସଏ ରୈବ ସଂ ରୈସୀଏ କ' ଚୁକନ ଢନାହ/ ଏକ ସଏ ଆଠ ରୈବ  
 ଧ୍ବବି ଗେନି ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ପାଠ, ତକବ ରାଠ ଛମାବି ଭୋଜନ/କନ୍ୟା ପୂଜନ  
 କଏନେ ଢନାହ/ ଆ ତକବ ରାଠନ୍ନ ପାଠ ଚନିତେ ବହେନି, ଅନ୍ବରବତ/  
 ତେଁ ଘବକ ନୋକ ଅନ୍ବମାନ ନଗା ବହେନ ଢୁଅି, ଜେ ଦୃ ସଏ ରୈବ ସଂ

ରେଁସୀଏ କ' ଚୁକନ ହେତାହ, କମ ନାହି।

ଅସମ୍ଭର କେ ସମ୍ଭର କବଏ ରଁନା ରଁାତ ଜେ କହନମ୍ଳ, ତକବ ପାଣ୍ଡାଁକ  
 ଥିସ୍‌ସା କହେଁ ଅାରମ୍ଭକ ଅଢ଼ି। ଏକ ରେଁବ ଅଁାମିକ ପଞ୍ଚାଘାତକ  
 ଚପେଠ ମେ ଅାରିଁ ଗେନ ଢୁନାହ 'ରାସ' ଜୀ। ରାଁମା ମେଁବ ନାହି ଓଠନି।  
 ସେ ଭବି ବାତି ମନ୍ତ୍ରୋଚାବଣକ ସଁଗ ମେଁବ ଓଠେରାଁକ ପ୍ରୟାସ, ତା ଧବି  
 କବେତ ବହନାହ ଜା ଧବି ଢେଗ ଓଠଏରାଁ ମେ ସହନ ନାହି ଭ' ଗେନାହ।  
 ଦୃଢ଼ିଶୁାସ ଢୁନନି ଜେ ହମ ଅପନାହି ପ୍ରୟାସ ସଁ ଠୀକ କ' ନେଁ ଅପନ  
 ମେଁବ। "ଓଠତ କୋନା ନେ" ସେହୋ ରାଁଜାଧି, ସଁଗାହି ଅଞ୍ଚାସ ଅା  
 ମନ୍ତ୍ରୋଚାବଣ କବେତ ବହନାହ, ନଗାତାବ । ଅନ୍ତତଃ ସହନତା ହାଥ  
 ନଗନନି, ଅା ସବପଠ ଚନଏ ନଗନାହ, ରିଁବ କୋନୋ ନାଠୀ/ଢୁଡ଼ୀକ  
 ସହାବା ନେନାହି। ଅାଢ଼କ ନୋକ କେ ଓ ପ୍ରସଁଗ ଅରିଶୁସନୀୟ ସନ  
 ନଗତନି। ସ୍ୱଦା ଅଢ଼ି ଓ ଅିଞ ପ୍ରତିଶିତ ସହ।

ସାନ 2002 ମେ ୫୫ ରବିବର ଅରସ୍‌ଥା ମେ ଶ୍ଳାନକବ ଦେହାରସାନ

भेननि/ सेहो ञ्छा-मुये सन/ कोनो द्दःख-रेंमारी  
नहि, कोनो दराज, कोनो पथा-पवहेज नहि/ आरँ ञ् क्री-  
कोनो संभर भेननि, से तँ कहेरँ कठिन श्रुति/ ज्योतिष  
रिच्छानक गहन श्रुधायनक हनसुकप संभर भेननि, आ कि कोनो  
देरीय शैजिक हनसुकप, से नहि जानि/ सिद्ध योगी सभ, योग  
दर्शन आ उँत्र-उपनिषद् पवम्पवाक श्रुत्तासक माधाम सँ  
ञ्छामुये प्राप्त कवेत छनाह, एहन हमवा पलिनल्ल स्वन्न छनए/  
मुदा सामान्य मन्त्रा नेन सेहो ञ् संभर हेतेक, से नहि रूमन  
छनए/

पचासी रर्षक श्रुस्थथा धवि, माने श्रुपन श्रुत्रिम साँस  
धवि 'रास' जी नेखन-कर्मक प्रति पूर्णतया समर्पित बहनाह/  
साहित् लानकब सौख नहि छननि/ आ ने लानकब आजीरिका  
छननि/ साहित् लानका नेन साधना छननि/ से ओहि साधना मे नीन  
बहनाह/ श्रुपन जीरनक एकलक ऋणक एहि तवहेँ सद्वपयोग

କବରଁ ଅନ୍ଧକବଣୀୟ ଅଞ୍ଜି/ ଅଞ୍ଜି ନ'....ହମ-ଅହଁ, ସଭ ଗୋଷ୍ଠେ ସଂକନ୍ପ  
କବୀ, ଜେ ହିନକ ପଦଚିହ୍ ପବ ଚନି ସକୀ ଅଞ୍ଜି ଅପନ ମନ୍ଦ୍ରା ଜନ୍ମ  
ସହନ/ସାର୍ଥକ ରଁନା ସକୀ/ ଜେନା 'ରାସ' ଜୀ ଅପନ ଜନ୍ମ ସହନ  
ରଁନୌନି/ ତତେକ ସହନ, ଜେ ଅମବ ଭ' ଗେନାଟ/

ସଂପାଦକୀୟ ସୂଚନା- ଏହି ସିବିଜକ ଫୁବାନ ଫ୍ରମ ଏହି ନିକପବ ଜା  
କହ ପଢ଼ି ସକୈତ ଛୀ-

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ମା 'ରାସ' ଏରଁ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ  
ଫୋଗଦାନ-1

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ମା 'ରାସ' ଏରଁ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ  
ଫୋଗଦାନ-2

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्ननक पविरावक

योगदान-3

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्ननक पविरावक

योगदान-4

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्ननक पविरावक

योगदान-5

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्ननक पविरावक

योगदान-6

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्ननक पविरावक

योगदान-7

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्ननक पविरावक

যোগদান-৪

মৌথিনী সাহিত্যমে ঔপেন্দ্রব নাথ মা 'রাস' এৰুঁ স্নানক পবিরাবক

যোগদান-৭

মৌথিনী সাহিত্যমে ঔপেন্দ্রব নাথ মা 'রাস' এৰুঁ স্নানক পবিরাবক

যোগদান-10

মৌথিনী সাহিত্যমে ঔপেন্দ্রব নাথ মা 'রাস' এৰুঁ স্নানক পবিরাবক

যোগদান-11

মৌথিনী সাহিত্যমে ঔপেন্দ্রব নাথ মা 'রাস' এৰুঁ স্নানক পবিরাবক

যোগদান-12

মৌথিনী সাহিত্যমে ঔপেন্দ্রব নাথ মা 'রাস' এৰুঁ স্নানক পবিরাবক

যোগদান-13

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं ज्ञानक पविरावक

योगदान-14

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं ज्ञानक पविरावक

योगदान-15

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं ज्ञानक पविरावक

योगदान-16

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं ज्ञानक पविरावक

योगदान-17

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं ज्ञानक पविरावक

योगदान-18

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं ज्ञानक पविरावक

योगदान-19

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं ज्ञानक पविरावक

যোগদান-20

স্বপন মঁতরা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব পঠাঙ।

২.২.হিতনাথ মা-মৈথিনী সাহিলমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক  
পবিরাবক যোগদান-১২



हितनाथ मा

(मेथिनीमे ग्रामगाथा रिधाकेँ नर जीरन देनिहाब, पाठकीय  
रिधाक श्रृंगश्रा। संपर्क-9430743070)

प्रभात'मे प्रकाशित समाचाब

प्रसिद्ध खानोचक मोहन भावदुज 'प्रभात' (1933-1934)क

প্রসঙ্গমে ভার-চিত্র, রাঁগা-চিত্র, স্থায়ী স্তম্ভ, সমাচাব, খেন-  
 সমাচাব আদিক রিষয়মে তকোনীন রিভিন্ন পত্রিকাক তননামেক  
 রিশৌষণ কবেত ছথি, তঁ লানক দৃষ্টি নিম্ননিখিত রিন্দুপব  
 পড়েত ছনি - "প্রকাশনক দৃষ্টিএঁ যত্ৰপি প্রভাত মিথিনা তথা  
 রিহৃতিক মধারতী ছন, তথাপি সঁযোজনক আধাবপব রঁন্নতো  
 ঞ্শঁমে দ্বনুসঁ নগ ছন/ ভার-চিত্ত আ রাঁগা-চিত্র মিথিনা তথা  
 প্রভাত দ্বনুমে বহেত ছন, কিন্তু প্রভাত জেঁ হস্তনিখিত পত্রিকা ছন  
 তেঁ একব রঁন্নবঁগী আ শৌত-শ্চাম, চিত্রক ঞ্বনগড় আকর্ষণ রেঁসী  
 গাড় ঞ্ছি/ ম্বখ-পৃথক আ কিছু ঞ্ছ মহন্নপূর্ণ বচনারনা পৃথক  
 কনামেক প্রস্তুতিযো দর্শনীয ঞ্ছি/ রিহৃতিমে স্তম্ভক সঁখ্যা ভনে  
 রেঁসী হো, ম্বদা প্রভাতমে স্তম্ভক উপযোগ জতেক স্বরিচাবিত  
 টংগসঁ কযন জাঙত ছন ততেক রিহৃতিমে নহি/ জেনা সমাচাব  
 নামক স্তম্ভ/ সম্মাদদাতাসঁ প্রাপ্ত সমাচাবক সঁকনন-প্রকাশন  
 ঞ্বন্বর্ষগিক কপমে নহি, সূতব্ব কপমে কযন জাঙত ছন/  
 রিহৃতিমে দেশ-দর্শন নামক স্তম্ভ এহি ঞ্মমে প্রকাশিত

होगत हुन, किन्तु प्रभातक समाचावमे सामाजिक घठनाक प्रसूखता वहेते हुन तँ रिहृतिक 'देश-दर्शन'मे बाजनीतिक घठना- चङक/ एकव श्रतिविज प्रभात प्रायः पहिन पत्रिका हुन जे खेन-समाचार प्रकाशित कयनक/ एहिसँ पूर् खेन-जगतकेँ मेथिनीक पत्रिकामे स्थान नहि भेठन वहेक/ ए तथा श्रहृत्त महृत्तपूर्ण थिक/ एहिसँ मिथिना, मिथिना मिहिव, रिहृति श्रादि पत्रिकासँ प्रभातक चावित्रिक भिन्नता स्पष्ट होगत श्रद्धि/ ओ सब पत्रिका सृदृित हुन, प्रभात हसृनिखित- ए पार्थका ओतेक उन्नेखनीय नहि श्रद्धि जतेक ए जे श्रान पत्रिका सब जतः स्थापित साहिलकाव श्रा समाजक मठोमाठ राजिसभतेक मानसिक राापारक देन हुन ततः प्रभात मिथिनाक श्ररा-हृवक सोच-रिचार श्रा राारहाव-मर्यादाक प्ररजा रँनि कः श्रायन हुन।"

निज सँराददाता द्वावा समाचार मेथिनी तथा हिन्दी हृनु भाषामे श्रद्धि/ हम एहिठाम मेथिनी भाषाक किहृत्तु समाचार प्रसृत्त क' वहेन

ভী/ আনো বিষয়-রস্তু ন'ক' পহিন্দা জে প্রস্তুত কযনে ভী, ওহো  
 মাত্র মেথিনী ভাষাক/ হিন্দীমে প্রকাশিত সমাচাব জখন হিন্দীক  
 শ্ৰয়ায় বিষয়ক প্রস্তুত কবরঁ, তখন হিন্দীযোক সমাচাবসঁ  
 তকোনীন সমাজক নীক-রঁজায় সমাচাবসঁ শ্ৰয়গত কবায়রঁ/

01. শ্বঁক-0৪, শ্ৰয়গস্তু-1933 (নিজ সঁরাদদাতা দ্বাবা)

কোজনখ-তাবীখ ৬ জ্বনাঞ্জক কোজনখ পত্তরঁাবি ঠোন নিরাসী  
 শ্রী প্রজ্ঞানন্দ মাক শ্ৰসাময়িক একাএক মৃহেসঁ কোজনখ  
 জনসম্বদায় শ্ৰহন্ত দ্বংখিত শ্ৰুতি/ শ্ৰফরাত এ শ্ৰুতি জে গত রুঁধক  
 বাতি, নিদ্রিত শ্ৰসস্থামে সাঁপ কাঠি নেনকঁহি, পবন্তু শ্ৰধিকাঁশ  
 মতি এহি রঁাত কঁ নির্মূন কবেক সাথং জোড় দে ভুখি জে হিনকা  
 কোনো শ্ৰাকস্মিক ভয়ানক দ্বংখ শ্ৰাঞমণ কযনকঁহি/ রিশুস্তু  
 সূত্রসঁ ছাত ভেন শ্ৰুতি জে তা.১৭জ্বনাঞ্জক  
 মহাবাজাধিবাজ, দবভঁগা শ্রীনগব(পূর্নিয়া জিনা) ডৌড়ীমে জা

कबीर ४ घण्टा सुशोभित कयने हुनाह /

एहि ररुष ससुग्रत प्रथमा पवीरुगामे सुथानीय सुआडुसदन ससुग्रत  
पाठशानासु सुी तेज नावायण मा (खुक, नो.प्रा.सुहन कोजनख)  
तथा महेनुदव नाथ मा (रैठु, कशीनाथ मा उ.उग्रसेन)  
समुमिनित भेन हुनाह / दनु गौठे पवीरुगोतीर्ण भेनाह /

गत १७ जुनाङुक खनगौर ठीम तथा पंडौन ठीमके मेच  
समुभारी हुनेक / जाहिमे खनगौर ठीम कोजनख ठीमसु चावि  
पुनेयव रौबो कय क' पंडौन नय गेन / पंडौन ठीमक पुनेयव  
डवि जयरुाक कावण, मेच खेनायरु, घुमा फिवा सुसुीकाव  
कयनकेहि /

कोजनखक सुी कशीनाथ मा उरुफु उग्रसेन के सुी वघुरुसु  
चौधवीक रुशुजक किरु जमीन देन कबीरु पचास साठि ररुषसु

ଅଧିକାବମେ ଚନ ଅରେଁ ଡ଼େହି/ କିଛି ଦିନ ପୂର୍ବ ଓ଼ି ଜମୀନ କେ ଦ଼ି଼ିଣ  
 ରାବି ଖ଼େନ ନିରାସୀ ଶ୍ରୀ ଯଶ଼ୋଧବ ମିଶ୍ର ( ଜନିକା ନାମସଁ ସରେଁ ଭେନ  
 ଡ଼େହି ତିନିକାସଁ କେରାନା ନେନେହି/ ତଦନନ୍ତବ ଖ୍ର ଅ଼଼ରା଼ ଓଁଡ଼ନେକ  
 ଜେ ଶ୍ରୀ ଯଶ଼ୋଧବ ମିଶ୍ର ଓ଼ି ଜମୀନ କେଁ ଅ଼ାରାଁଦ କବକ ହେତ ଓଁଡ଼ତ  
 ଢ଼ାଧି/ ଅତଏରଁ କାଶୀନାଥ ମା ସାରଧାନ ଭୟ ଅ଼ର୍ଥାତ କବୀରଁ  
 ତୀସ,ଚାନୀସ ହିଧିଆବ ରଁନ୍ଦ ଅ଼ାଦମୀ କେ ସର଼୍ ଖେତ ଜା ତା.୨୭ ଜୁନାଖ୍ର  
 କ' ନିରି଼଼ିନ ଅ଼ାରାଁଦ କଧନେହି/

ତା. ୧୭ ଜୁନାଖ୍ର କ ଶ୍ରୀ କାର୍ତିକେସ ମା ଓଁର଼୍ ଘୁନ୍ନୀ ରାଁରୁଁ କେଁ ରାଁସୀକ  
 ବ଼଼ୁ ରାଁରୁଁ ସଁ ୨ ରାଁଜୀ ସତବ଼଼ଜକ ଖେନ ଭେନ ଢ଼ନ/ଶ୍ରୀ ଘୁନ୍ନୀ ରାଁରୁଁ ଦ୍ଵନ୍  
 ରାଁଜୀ ଜିତନା଼/

ରିବ଼େନକ ସମୀପ ଏକ ରାଁଧ ଢ଼େକ, ଜେକବା କ଼଼ି ଗେନାସଁ ରିଶେଷ  
 ର଼଼ୀ ଭେନାପବ ତଥା ରାଁଡ଼ି ଅ଼ଧନା ସଁ ରାଁଧ ସଁ ଦ଼ି଼ିଣ ତବ଼଼କ  
 ଜାଧଦାତ ରଁମ୍ମତ ନ଼଼ ଭୟ ଜୟରାଁକ ସମ୍ଭାରନା ଭୟ ଜାଖ୍ର ଢ଼େକ ତଥା

उततव तवहक जायदात के सारकाश भय जागत ट्केक/ गत  
 राठिमे रिबोनक सहदेर माक सहायता सँ राँधक बह्यार्थ  
 दिनवाति पहवा पड़े छन, पवञ्च ता.१ज्जनाञ्ज क वातिमे  
 भगरतीपूवक महारीव नायकक सहायता सँ किछु हँसेवी नाठी  
 गडास नय ओहि राँधकेँ जर्रबदस्ती काठि देनकेँक/ राँध  
 कठराँक कान म्ठभेड़ो भय गेनेक जाहिमे बोक' रना दिससँ  
 ३गोठेँ केँ उँव काठ' रना दिससँ १ गोठाँ केँ मावि नगनेक/  
 मावि होयराँस पूर्र ओत' रिदेशिया नाच भ' बहन छन/ ञ रिषय  
 सबकावमे दाखिन भेन श्रद्धि/देखक चाही- की होज ट्केक/

02. श्रँक~१, सितम्बर-१९३३(निज समुदादाता द्वावा)

कोजनख-गत १० श्रगस्र क ७// रँजे सार्यकान सँ पँडोनक  
 फुठराँन मैदानमे वामपञ्चीक ठिमकेँ पँडोन ठिमक साथ  
 फुठराँनक खेन प्राबम्भ भेन/ पँडोनक ठिमक तवह सँ दू

সাহেৰঁ ৱহাদ্ৰব নানদাব ঞ্ৰংগবেজী জূতা পহিবনে খেনাও ছনাত/  
 খেন প্ৰাবম্ভ হোওতহি বামপঙ্কীক প্ৰনেযব কে ম্ৰুক্কা-থাপব  
 ঠেনমঠেনাক ত' কখে কোন, জূতাক নানৌক ঞ্ৰকাবণ ৱিদাও  
 প্ৰাপ্ত হোম নগনৌহি/ ঞ্ৰমশঃ এতেক তক ৱঁটি গেন জে দৰ্শকৌ  
 কে ম্ৰুঠ-ভেড় ভয গেন জেকব ফনসুকপ দস মিনঠ পূৰ্হি খেন  
 সমাপ্ত কয দেন গেন/ বামপঙ্কীক খেন উত্তম বহনন্স সন্না  
 ঞ্ৰক গোন কযনৌ পব দূ গোন সঁ হাবি গেনাত/ বামপঙ্কীক  
 সহায়তাক হেত তীন প্ৰনেযব কোওনখৌক ছনাত/

কোওনখ-তা.২১.৫.২২ মেঁ প্ৰাতঃ কানহি সঁ মূসনাধাব ৱৰ্ষা ভয  
 বহন ছন/সূৰ্যা-গ্ৰহণ দেখৰাঁক ককবৌ ঞ্ৰাশী নহি হোও ছন/  
 পবঞ্ৰ কবীৰঁ ১০ৰঁজে মূসনাধাব ৱৰ্ষা মীসী কপমে পবিপিত ভয  
 গেন/কবীৰঁ১১// ৱঁজে মীসী হোওতন্স ঞ্ৰৰ্ধ সূৰ্যা দৃষ্টি-গোচব হোম  
 নগনাত/ মীসী উগ্ৰাস্ত্ৰ সময় তক হোওতহি ছন তথাপি সূৰ্যাক  
 ৱৃষ্টি সময়২পব সাফ্হদেখ মেঁ ঞ্ৰেঁ ছনৌক/ ঠীক ১২ ৱাঁজি ক২৪

ମିନିଠି ପବ ଓଘ୍ରାସ୍ତ୍ର ଭୟ ଗେନ/ ତାହିସିଁ ଅନ୍ବଭର କୟନ ଜାଘଡ଼ି ଜେ  
ନିଧାମିତ ସମୟସିଁ ଗ୍ରହଣ ନାଗର ପ୍ରାବମ୍ଭ ଭେନ/

ତା. ୧ ଅଘ୍ରାସ୍ତ୍ରକ ଶ୍ରୀ ଧନନାଥ ମା ଓଝି ନୁନୁ ରାଁରୁଁକ ମାଧ୍ୟ ସଦାକ ହେତ  
ଏହି ସିଂସାବ ସିଁ ରିଦା ଭୟ ଗେନିତେ/ସ୍ରାହ୍ମ କର୍ମମ ସମଧାନ୍ବସାବ ଓତ୍ତମେ  
କତେକ ଚାଲି/

ରୁଁଧରାବ ତଦନ୍ବସାବ ତା./୨୩ ଅଘ୍ରାସ୍ତ୍ରକ ୧୧ ରର୍ଷକ ଅନ୍ବସ୍ଥା ମେ ଗୋଧୁନ  
ଠାହ୍ମବ କେ ଜ୍ଞାନ ପବସ୍ତବ ମୃତ୍ତେ ଭୟ ଗେନୈହି/

03. ଅଝିକ~୧୦, ଅଝିକୂର୍ବ~୧୦୩୩

କୋଘନଧ-ସ୍ଥାନୀୟ କ୍ବଜବ ଠୈନୀ ମେ ମୋଧତରଁ ସ୍ତ୍ରୁନ ଧୁଜନୈ, ଦେଧା  
ଚାଲି ଏକବ ଅଧ୍ୟା କତେକ ଢେକ/

ଦସମୀକ ଓସ୍ତେର ଶ୍ରୀ ୧୦୫ ଭଦ୍ରକାଳୀକ ସ୍ଥାନମେ ଶାନ୍ତି ପୂର୍ବକ

সমাপ্ত ভয় গেন/ সিবিয়াপ্বব,হিসাব তথা গামক রিদেশিয়া  
নাচ সভক মনকেঁ প্রফুল্লনিত কবেত ছন/

তা.২২ সিতম্ব্বক নিশাভাগ বাত্রিমে শ্রী স্বচয়তান্দ মা ক ঘবমে  
চোবি ভেন/দৃ ঠা পেঘ২ সৈধ পড়ন ছন/ঘবরৈয়া কে জাগি  
জয়রাক কাবণ চোবক সিনরাবি তথা স্বংগপোভা স্বথতাগমে  
ছুঠি গেলেক, জে দোসব দিন প্রাতঃকান থানা পন্নচারন গেন/

04. স্বক~ ১১, নরম্বব~১০২২

কোজনখ-তা.১১.১০.২২ গ্ৰ.ক প্রায়ঃ প্রহেক ঠোনমে গোঞীড়া  
ভেন/প্বরীবি ঠোনমে চাবি সৃশ্বব মাবন গেন/ রিশুস্ত সূত্রসঁ ছাত  
ভেন জে ভঠসীমবি মে এক দিন রাদ স্বর্থাৎ ২০ স্বকঠূঁরব ক  
গো ঞীড়া ভেন/

05. স্বক~১২, দিসম্বব~১০২২

ता.४ नरसुबक निशाभाग बात्रिमे मौजे कोजनख, ठौन  
 कजियानाक सनीब मियाँ पवसा सँ पछिम केथालीक बास्तामे खंडा  
 द्वाबा मावि देन गेन। प्निस् खंडाक पता नगा बहन श्रद्धि/जेकब  
 फनसुकप এখন तक पवसाक पाँच बाजपूत ( ) सन्देहक कावण  
 गिबहुताब भय हाजतमे बाखन गेन छन/जमानत भेनो पब  
 प्बनः मजिसुष्टेष्ट द्वाबा श्रूसीकाब कय देन गेन। एहि मृयेसँ  
 मुसनिम समाज तथा पवसाक बाजपूतमे पूर्ण हाहाकाब मचि  
 बहन श्रद्धि/देखा चाही एकब पविणाम कहाँ तक की होजत  
 छैक।

श्री ७ मती बानी चन्वारती साहिराँक अपन नैहब (कोजनख)  
 प्रति उँदाबताक फनसुकप एक सामेना उँब दू हर्द सतबँजी  
 दय श्रसीम यश के प्राप्त कयनेहि श्रद्धि। एहि समाजमे एकब  
 पूर्ण श्रभार छन। उँपर्यज रसु श्री जन्दबनाथ माक संबङ्गमे  
 बाखन गेन श्रद्धि। रिशुसु कपसँ छ्वात भेन श्रद्धि जे श्रीमती बानी

সালিঁক ঙ্ৰপা সঁ এক ঠা ঙ্ৰিষ্টিয়ন নাঙ্ঠ মাসাঙ্ঠবে ঙ্ৰাৰিঁ  
জাযত/

শ্ৰী ছাষিকেশ মা ঙ্ৰফ রঁচাঙ্ কবীৰঁ ডেঢ় মাসসঁ জুব এৰঁ যফ্ৰমা  
বোগসঁ ক্ৰুশিত ছুথি/ এহিসঁ কোঙনথ নিরাসী রিশেষ কয যরক  
সঁঘক সদস্য ঙ্ৰহঁত রাফন ছুথি/কাবণ ঙ্ৰ, সঁঘ এৰঁ প্ৰভাতক  
প্ৰতি জে সহান্ৰহতি দৰ্শঁনে ছুথি সে ঙ্ৰকথনীয ঙ্ৰষ্টি/ এহি  
নিমিত্ত যরক রুন্দ শ্ৰী ১০৮ জগজ্জননী তদ্রকানীসঁ প্ৰাৰ্থনা  
কবে ঙ্ৰষ্টি জে তিনকা শীঘ্ৰ ঙ্ৰাবোগা কয দেখিন/

বামপঙ্কী- তা.২ নরম্ৰবক কার্তিক পূৰ্ণিমা ক ঙ্ৰপনফ্ৰযমে কমনা  
কাতমে ঙ্ৰয় রৰ্ব জেকাঁ পুনঃ মেনা ভেন/যত্ৰপি ঙ্ৰয় রৰ্বক  
ঙ্ৰপেফ্ৰা নোক কম ছন/কিন্তু জুঙ্ৰাক খেন এহি রৰ্ব ঙ্ৰয় রৰ্বক  
ঙ্ৰপেফ্ৰা কহীঁ ঙ্ৰধিক ছন/জুঙ্ৰাক খেনমে মধ্ৰরঁনী তথা ঙ্ৰয় ২  
স্ৰ্থানক প্ৰসিফ্ৰসেঠ-সাছকাব সভ সম্মিনিত ছনাহে/

06 श्रृंक १, जनरवी१९३४

कोजनख- स्थानीय चन्दबानंद श्री एम.ग्र.सहनक फोर्थ पणित  
रौरू सहेदेर मा थक-ठैर्निंग कबर्राक हेत घोघवडीहा थक  
ठैर्निंग सहन गेनाह श्रुडि।

कोजनख- चन्दबानंद श्री एम.ग्र. सहनक सातराँ श्रेणीक २७  
रिठाथी मधर्रनी केन्दव सँ पवीश्रामे सम्यिनित भेन  
डनाह, जाहिमे २१ रिठाथी पवीश्रोतीर्ण भेनाह।

यमसम- ता. २२ दिसम्बर १९३३क प. गोपीनाथ मा उर्फ वचाज  
मा कबीर १२ रर्रक श्रसुथामे सदाक हेत एहि श्रसाव सँसावसँ  
रिदा भय गेनाह। गत तीन रर्र सँ नकर्रा र्राधि सँ ग्रसित डनाह।  
श्राद्ध कर्मम उततम कर्पे कयन गेनेहि। ग्र पँजिकारी पवीश्रामे  
महाबाजाक घबसँ दोशाना प्रापुत कयने डनाह।पँजिक रिषयमे

হিনক জে ৱিদুততা ছনৌহি সে ঞকখনীয ঞছি/ পেঁঘ২  
 পঁজিকাবো হিনক প্ৰশঁসা কবৰঁামে তিনমাত্ৰো সঁকোচ নহি  
 কবেত ছথি/ কবীৰঁ ৪ ৱৰ্ষ পূৰঁ প. উমা ম্ৰা ককবৌড়ক মৃয়ে  
 ভেনাপব সুৰঁ মহাবাজ বামেশুঁব সঁহে ৱহাদ্ৰব ঞনেক পঁজিকাবক  
 ঞৱেদন পত্ৰকেঁ ঞসুঁগ্ৰত কয হিনকা সৰঁপ্ৰধান মহাবাজী  
 পঁজিকাবক পদ প্ৰদান কয গৌৱৱানুিত ভেন ছনাত্/ এতৰেঁ  
 নহি, ভৌবাগড়ীক দবৰঁাব মধ্য ছ্ৰোঠা নাঠ সাতেরেঁ তাথ মিনৌনে  
 ছনথীহ্/ এহেন ৱিদুানক মৃয়েসঁ মেঁথিন সমাজ ঞহন্ত্ৰ শৌকাক্ৰন  
 ভয গেন ঞছি ঔব ঞশুঁবসঁ প্ৰাৰ্থনা কবে ঞছি জে হিনক ঞামো  
 কে শান্তি প্ৰদান কবথি/

ঞঁক~২, ঞপ্ৰেঁন১৯২৪

মধুৰঁনী- তা.৫ মাৰ্চ কেঁ ৱিহাব বনে ৱাঁৰুঁ বাজেন্দ্ৰব প্ৰসাদ জী  
 মধুৰঁনী, বাজনগব তথা জযনগবক নিবীঞ্ৰণ কযনৌহ্/

कोजनथ- ता.४-३-३४ ञ.क सार्यकान स्थानीय नो.प्रा.सूदनक  
श्रृंगनअमे गौश्रृंक एक सार्रजनिक रैठक भेन। जाहिमे निश्रय  
भेन जे प्रहेक ठौन सँ दस२ कपैया दय हकम्पसँ नश्रु भेन  
मकानक स्थानपव प्वनः सँस्रुत पाठशाना ँव नो.प्रा. सूदनक  
एक मकान रँनाउन जाय।

कोजनथ- ता.५ मार्च सँ श्री तावानाथ माक श्रुधाश्रुतामे यरक  
सँघक तवह सँ मुह्रत दरा रितवण कयन जाअत श्रुद्धि।  
कोजनथक श्रुतिविज श्रुनेक समीपस्रुथ गामोक जनता मुह्रत  
दरा नय नाभ ँठा बहेन छथि।

कोजनथ- ता. १२-३-३४ ञ.क बाजग्रामक श्री जय नावायण सिँह  
ठाह्रुवक योगा रँनक श्री श्रुयोधानाथ सिँह ठाह्रुवक श्रुँभ रिराह  
कोजनथक गीतादत्त माक कश्राक सँग समारोहक साथ सानन्द  
समाप्त भय गेन। एहि श्रुँभ रिराह सँ कोजनथ निरासी श्रुह्रु

প্রফুল্লিত শ্রুতি।

কোজনখ- ১২-২-২৪ক প্রাতঃকাল মধুর্নীক মজিস্ট্রব ঔব সরঁ  
 ডিপ্‌স্‌টী মজিস্ট্রব কোজনখক হুকম্প-পীড়িত -মনুষ্যক  
 মকান কে সুৰ্য নিবীষ্ণ কয স্থানীয় চন্দবান্দ  
 ফ্রী.এম.গ্র.স্‌ফনক মেদানমে কবীরঁ ৪০০/-রুপেয়া খেবাত প্রদান  
 কযনেহ ঔব কর্জা নেম রনাক নাম নিখি জনতা কে পূর্ণ  
 ঞ্চাসন দেত মধুর্নীক নেন প্রস্থান কযনেহ।

কোজনখ- ১২-২-২৪ক মধুর্নীক প্বনিস সরঁ জঁস্পেক্‌টব  
 কোজনখক খবারঁ-খবারঁ জনাব তথা রাঁধকাময হমিক নিবীষ্ণ  
 কযনেহ। গৌঞ্চাকঁ ঞ্চনেক সহায়তাক রচন দয গেনাহ। জেকব  
 ফনসুকপ এক জনাব সাফ হোযরঁ প্রাবম্‌ভো ভেন পবন্ব সেহো  
 পূর্ণ কপে সাফ নহি ভয সকন।

କୋଉନଖ- ସର୍ବ ଡିରିଜନ-ସେନ୍ଟ୍ରିନ-ବିନୀଷ୍ଟ କମିଟିକି ତବହସ୍ ୪  
ହୁଆଁ ସାହକ ହେତ ଲାଥ ନାଗନ/ କିନ୍ତୁ କୋନୋ୨ ତବହସ୍ କେରନ ୨  
ହୁଆଁକ ଜନ ନୋଗକ ରାରହାବମେ ଆରି ବଲେ ଅଢ଼ି/

କୋଉନଖ- ତା.୨୧ ମାର୍ଚ୍ଚ ମେ ଶିକ୍ଷା ରିଭାଗକ ଡିସ୍ଟ୍ରିକ୍ଟ  
ଓଁସ୍ପେକ୍ଟର ସ୍ଥାନୀୟ ଚନ୍ଦ୍ରବାନନ୍ଦ ହୁମି. ଏମ.ଓ.ସଂହନକ ନିବିଷ୍ଟଳ  
କଧନେହ/ ସଂହନକ କାର୍ଯ୍ୟାଳୀ ଦେଖି ପୂର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରସନ୍ନ ଭେନାତ/

କୋଉନଖ- ଶ୍ରୀ ଭବତୁ ମା ରେଡ୍ କୈକ ସମ୍ପତାତ ପୂର୍ବ ସଂ ଘବକ ଭିତ  
ଦେଶ୍ୱରୈ ଢୁଠି/ଓଠି ଘବକ ମାଠିକ ନୀଚାଁ ଅଧନ ତକ ତିନ ମନ୍ତ୍ରାକ  
ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଅରଧରକ ହଡ଼ି ଓଠିକେ ଅଢ଼ି/ ଚିବକାନ ପୂର୍ବ ଓ ସ୍ଥାନ  
ସ୍ତନମାନକ ଗୋବି ଅଧରା କି ଢୁନେକ ? ତକବ ପତା ନାହି/ନଗେଡ଼/

ତା. ୧୧ ମାର୍ଚ୍ଚକ ସର୍ବ ଡିରିଜନ ସେନ୍ଟ୍ରିନ ବିନୀଷ୍ଟ କମିଟିକି ଅଧାଃ  
କେ କୋଉନଖକ ହସିସାବ ପେବରାକ ଯା ଜୋଧେରାକ ପ୍ରବନ୍ଧ କବରାକ

হেত য়রক সঁঘক তবফ সঁ নিখন গেৰ্ণেহ/

মদ্রাস নিরাসী ডাক্ঠব মলাজনী কে খেবাতক হেত কিছু দরা  
 সঁঘমে প্ৰেযিত কয দেৱাক হেত য়রক সঁঘক তবফসঁ নিখন  
 গেৰ্ণেহ/ ডাক্ঠব মলাজনীক প্ৰথম পত্ৰ খ্ৰাশী জনক দেখি প্নঃ  
 সঁঘক তবফসঁ দৱাক নিস্ঠ পঠাৱন গেৰ্ণেহ/ তেকব উততব  
 নিবাসীজনক প্ৰাপ্ত ভেন/

মধৰ্ণনীমে কনকতাসঁ নরীন খ্ৰাগন্বক বিনীফ কমিঠীক খ্ৰধাফ  
 কে য়রক সঁঘক তবফসঁ কোজনখক হুকম্প-পীড়িত মন্বষাক  
 দ্বঃখ নিৱাৰণ কবৰাঁক হেত নিৱেদন কযন গেৰ্ণেহ খ্ৰষ্টি/ দেখা  
 চাৰী, এহি দিশে কিছুও ধ্যান দে ছথি ৱা নহি ?

নো. প্ৰা. স্হন ঔব সঁস্হত পাঠশীনাক মকানক সহায়তাক হেত  
 মজিস্ঠব, প্বনিস সৰ্ জঁস্পেক্ঠব কাঁগ্ৰেস কমিঠীক খ্ৰধাফ এৰঁ

क७एक सँसुथक शुधरुकर सेररमे सँघक तवहसँ नररेदन  
कयन गेनेह शुद्धर/

यरक सँघक शुररेदन पत्र पव सेनुठन वरनरु कतरठरक  
वरजनगव केनुव सँ कुरुनख वरमपशुठर केनुवमे शुरररर गेन/

ररगत कपसँ पतर चनन के गत १० तररुकर वरतरमे डुरुके  
तरनरथपुवमे सुुरुनरत करकँ नरन पनरक ररररु डेरने/ हपुते  
ररतरत डेरनरपव डकरनमे नरन२ दरग दुशुकरगुरुकर वुरुकेते डुके/

तर.३० तररुकर सररुकरन हवरपुवक शुठर पवडरननु डरक दु ररनकक  
सरुकरनु कुरुनखक शुठर गुरुरुधन डरक दुनु कशुक प्रसुंग  
रुडुरुगुरुवररक गरुठररुडे डुडु गेन/

डुधरुनर- तर. ३१-३ ३४ गुरुक ७ रुके सररुकरन सँ सुवरकरशुडु

সঁ পূর রনা মৈদানমে কবীরঁ ২০ মিনঠঁ তক মহামো গাঁধীক  
 প্রভারশানী রাাখ্যান ভেন/ এহি সারঁজনিক সভামে কবীরঁ ২০-  
 ৪০ হেজাব জনতা ঞকত্রিত ছন/ সভাক সময়মে  
 সনাতনধর্মাৱনশ্রী মহামো গাঁধী কে কাবী মঁডা দেখরঁেত নানা  
 প্রকাবক হেন্না-গ্বন্না মচরঁেত ছনাহ/

(শ্রাগাঁ ঞঁকক সঁচাব ঞামশঁঃ শ্রগ্রিম ঞঁকমে)

ঊপর্যঁজ সমাচাবক শ্বরনোকন কযনাপব তকোনীন সমাজ  
 রিশঁেষতঃ কোজনখ গামক  
 রৈযজিক, সামাজিক, শৈঞ্লিক, শ্রার্থিক, ধার্মিক ঞহাদি  
 রিষযক সোচ প্রতীত হোঞত শ্রুতি/ যরক সঁঘক কার্যপ্রণানীক  
 দর্শন হোঞত শ্রুতি/ গামক চন্দ্বানঁদ হ্রী ঞঁগনিশঁ মিড্ণ  
 স্হন, নোশ্বব প্রাঞমবী স্হন, সঁস্গত পাঠশঁানা, ম্বসনমানক ঞক  
 স্হন খুজরঁাক সমাচাব, হেবিজন রিছানয শ্রাদিক রিষযমে

समाचाव श्रुति / उपर्युक्त समाचाव मे दृ श्रुंकक समाचाव १९३४७.क  
हकम्पक रौदक श्रुति, जाहिमे गामक निरासी एरुं श्रुक सँघक  
सक्रियता सुपुष्ट देखाउत श्रुति / श्रुक सँघक एक सदस्यक  
रौमावीसुं चिन्त्रित होशरौक समाचाव सेहो मानरीय सुंरेदनाक  
मनक देखरौत श्रुति / खेन समाचावमे श्रुठरौन एरुं सतवँजक  
रिषयमे श्रुति / प्रहेक समाचाव निज समुददाता दुवा देन गेन  
श्रु 'प्रुभात'क सम्पादक तावानाथ माक हाथसँ निखन श्रुति / सभ  
रुद्रक समाचाव समारेशुं कयन गेन श्रुति / डा. बाजेनुद्व प्रसादक  
भाषण एरुं गौधीजीक सभामे सनातनधर्मारनश्रुदुवा हो-हनुना  
एरुं कावी मणुा देखेरौक सेहो समाचाव श्रुति / जतय एक दिस  
दराउ रितावणक समाचाव श्रुति तँ दोसव दिस सबकावक  
सक्रियताक समाचाव सेहो प्रमुखता सँ देखाउन गेन श्रुति /  
सबकावक कमीक दिस सेहो धानाकश्रुित केन गेन श्रुति /

सुंपादकीय सूचना-एहि सिबीजक पुवान कुम एहि नरुंकपव जा

কহ পড়ি সকেঁত ছী-

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক পবিরাবক যোগদান-

1

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক পবিরাবক যোগদান-

2

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক পবিরাবক যোগদান-

3

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক পবিরাবক যোগদান-

4

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক পবিরাবক যোগদান-

5

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক পবিরাবক যোগদান-

6

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক পবিরাবক যোগদান-

7

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা এৰঁ স্ননক পবিরাবক যোগদান-

8

मेथिनी साहित्ये तावानाथ मा एरुं न्नक पविरावक योगदान-

9

मेथिनी साहित्ये तावानाथ मा एरुं न्नक पविरावक योगदान-

10

मेथिनी साहित्ये तावानाथ मा एरुं न्नक पविरावक योगदान-

11

मेथिनी साहित्ये तावानाथ मा एरुं न्नक पविरावक योगदान-

12

श्वपन मंतरा [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) पव पठाडु।

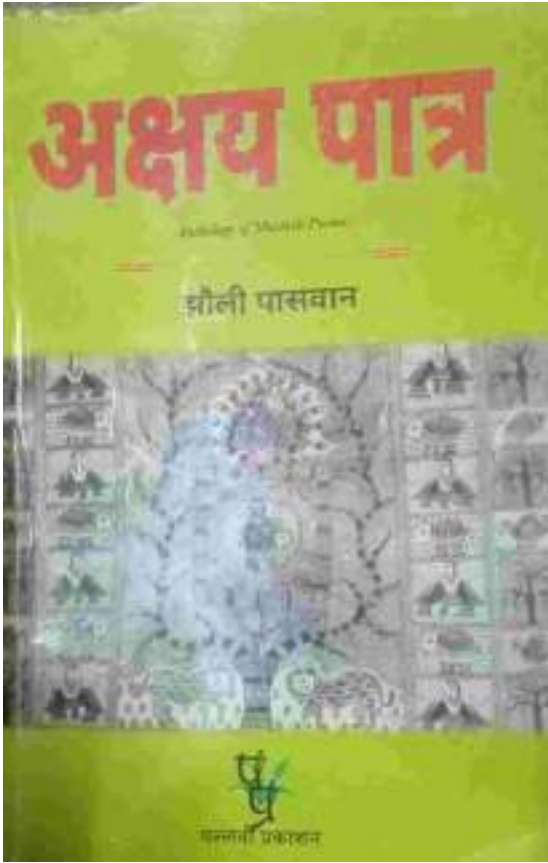
२.३.नागदेर कामत- श्वय पात्रके वचनाकाव



*নানদের কামত*

*শ্রদ্ধেয় পাত্রকে বচনাকাব*





मधुरैनी जिनीतम्नत सकवी थानाके रीवसाजव गामक सु०  
गवीरैनाथ पासरान आ सु० फुनेशुवी देरीजीके घव ९ मञ्ज  
९९७९ केँ श्री मोनी पासरान जीके जन्म भेननि / ओ दादा सु०

ଠକାଣ୍ଡ ପାସରାନ ଥା ଦାଦୀ ସୁଠ ବାମରୌନ ଦେରୀ 'କ ରଠଠ ଦ୍ଵନାକ ଏରମ୍  
 ନାନା ସୁଠ ହେକନ ପାସରାନ ଓ ନାନୀ ସୁଠ ସ୍ଵନବୀ ଦେରୀ 'କେ ଠଠ ରୁଁମ୍  
 ଥେନୌନା ବହଥା। ରାନକ ମୌନୀଜୀକ ଶିକ୍ଷା - ଦୀକ୍ଷା ସମୟ ସଂ ଗ୍ରାମୀଣ  
 ହେତ୍ରମେ ଭେନିନି ,ସ୍ଵାତକ ପଠ୍ଠୌନ କାନେଜ ସଂ କୟନାହ ଚେନ। ସନ୍  
 ୨୦୦୧ ଖ୍ରୀଠ ସଂ ପ୍ରଭାତ ସଂସ୍ଥା ରଦୀରନ ସଂ ଜୁଡ଼ିକୟ ମହାଦନିତ  
 (ସ୍ଵସହେବ) ସମାଜକେ ଧୀୟାପ୍ଵତା କେଁ ପଠାରେତ- ନିଧାରେତ  
 ଜାଗକକତା କବେତ ଥାରି ବହେନାହ ଥକ୍ତି। ରିଗତ ୨୦୦୩-୦୭ ଖ୍ରୀଠ  
 ମେଁ ବାହୁବୀୟ ଦନିତ ମାନରାଧିକାବ ଥକ୍ତିଧାନକ ନିବୀକ୍ଷଣ କାଜ  
 କୟନ। ହିନ୍ଦୀକେ ରାନ ପତ୍ରିକା ' ଥିନତେ ହୁନ " କେ ପ୍ରକାଶନମେ  
 ପ୍ରଭାତ ସଂସ୍ଥା କେଁ ସକ୍ରିୟ ସହଯୋଗ ଦେନିନି। କାବିତାସ ଖାଣ୍ଡିଆ -  
 ଦିନ୍ନୀ ସଂ ବୋର୍ଷନୀ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କେବ ତହେ ସ୍ଵସହେବ ସମ୍ଵଦାୟକେ  
 ରାନିକା ସଭମେ କୌଶ୍ଠିକ ଜାଗକକତା ରଠେରାମେ ଥହେନିଶି ସେରା  
 କୟନିନି। ହିନକ ବଚନାମେକ ଗତିରିଧିକେ ଦେଖେତ ବମେଶ୍ଵ ବଞ୍ଜନଜୀ  
 'ହେବ ମିଥିନା ' ହିନ୍ଦିମେ ପିତାକ ଖୁମିକା ନେନ ଥରସବ ଦେନଥିନ।  
 ରର୍ତ୍ତମାନ ସମୟମେ ସବକାବୀ ରିକ୍ଷାନୟ କେବ କମଜୋବ ରଠା ସରଠକେ

ସୂର୍ତ୍ତ୍ର କର୍ମେ ପଠାରେତ ସବାହନୀୟ କାଞ୍ଚ କୟ ବହନାତ ଶ୍ଵଠ୍ଠି । ରିହାବ  
 ସବକାବକେ ବାଞ୍ଚଭାଷା ରିଭାଗ 'କ' ତ୍ରିମାସିକ ପତ୍ରିକାମେ ବଚନା  
 ଶ୍ଵାଠବ ନୌଐଡା ସଁ ପ୍ରକାଶିତ 'ପାଖୀ' ପତ୍ରିକାମେ ତିନକ କରିତା  
 ତ୍ତ୍ରପେନ ତ୍ତ୍ଵି । ହିନ୍ଦୀ - ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟ ଶ୍ଵାନ୍ଦୋନନମେ ନିୟମିତ କର୍ମେ  
 ରିଭିନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମମେ ସଁନଗ୍ର ବଢେତ ତ୍ତ୍ଵି । ଜାତି ନଗନଶିନତା କେଁ ଦେଖି  
 ଦିନ୍ନୀକ ଭାବତୀୟ ଦନିତ ସାହିତ୍ୟ ଶ୍ଵକାଦମୀ ମାର୍ଚ୍ଚ ୨୦୨୧ ମେ"  
 ଶ୍ଵକ୍ଷେତ୍ରକବ ହେନୋଶିପ " ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କେନେ ବଢେନ । ଶ୍ରୀ  
 ପାସରାନ ଜୀକ ମୈଥିନୀ ମାତ୍ରଭାଷାମେ ମାଠିକ ସ୍ଵର୍ଗଧ, ଶ୍ଵକ୍ଷୟ ପାତ୍ର  
 ମୌଖୀ ପ୍ରକାଶିତ ଭେନ ଶ୍ଵଠ୍ଠି । ଓ ପାହିନେ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷାମେ ଶ୍ଵପନ  
 ବଚନାଧର୍ମିତା ନିମାଢେତ ତ୍ତ୍ଵନାତ, ଜେ ମାଁ କା ଶ୍ଵାଚନ, ସାବଖୀ ତଥା ରାଁନ  
 ସାହିତ୍ୟମେ ଶ୍ଵାସମାଁ କେ ତାବେ, ଉଁଦ୍ରଧନ୍ବ, କରଁ ଶ୍ଵାଢେଁଗେ ଚଁଦା ମାମା  
 କର୍ମେ ଜଗଜିୟାବ ଭେନ ବଢେଖି । ଗ୍ରା କହି ସକେତ ତ୍ତ୍ଵି ଜେ ନ୍ନନକ  
 ଦର୍ଜନୌ ହିନ୍ଦୀ ମୌଖୀ ନେନ ପାଠୁନିପି ତ୍ତ୍ଵେନ ସେ ପ୍ଵସ୍ତକ କର୍ମେ  
 ରହବେରାକ ମଦେତଗାବକ ରାଠ୍ଠ ଜୋତି ବଢେନ ତ୍ତ୍ଵେକ । ମୈଥିନୀ କଥା

গোষ্ঠী 'সগব বাতি দীপ জবয়' কে স্বরসব পব স্বপন মৌখিনী  
 কারা সঁগ্রহ হমবা ভেঁঠ কেননি, তাহি মাদে কিছু চর্চা কবেত ছী/  
 সত্ত্বপ্রকাশিত স্বয়ং পাত্র মৌখিনীমে ছিড়িয়াএন কারাক সঁগ্রহিত  
 ১২২ পৃষ্ঠক পোখী থীক ,জাতিক দাম দূসয পচাস ঠাকা বাখন  
 গেন ছেঁক/ এহিমে ৭৪ গোষ্ঠ নর করিতা স্বষ্টি জে পন্নরী  
 প্রকাশন নির্মণী সঁ সন্ ২০২২ ম প্রকাশিত ভেন স্বষ্টি/ প্রসিদ্ধ  
 সাহিত্যকাব গজেন্দব ঠাকব জী হিনকা পোখীকে মহিমা মণ্ডন  
 কযনে ছথি/ সুয়ঁ করিরব মৌনী পাসরান জী পোখীক রারঁত  
 স্বপন রাঁতমে কারা সৃজন কেব স্বনেকো পলনু পব রিস্তাব সঁ  
 স্বাধনিক সাহিত্য কেব পবিপেয়্য মে গপ্প কযননি হেন/ হিনক  
 কারা সৌখর রঁত দিরা হোয ছহি/ সমকানীন করিতা কেব  
 পাঠক কেঁ হিনক করিতাক ভার স্পষ্ট রুঁমাণত ছহি/ বামাযণ  
 গ্রন্থকে তবহ স্বাৰ্ষ কারা স্বাওব মহাভাবত গ্রন্থ কেব তবহ  
 স্বস্থি কারা পড়রাক নরপিঠিকেঁ ফুর্সত নহি বহনে করিজী  
 একপনিয়াঁ - দূ পনিয়াঁ স্বকরিতা বচি পাঠক রদ্দা রাঁচ

प्रुर्शंसाम्के काज अरडेवनाह अड्डि/ ररतमान समयमे गठ  
 करिता धम मेने अड्डि/पठ जे डुंद आ दोला कपेँ वचन जाअ,  
 तकव जगह आरँ फकवा आ गीत न' नेने डेक,जे मँचीय प्रसुति  
 सँ थपवी रँठोवेत डेक/ पवँच अपन भार सोम कपेँ जाहि  
 रिधामे बाधि समाजकेँ उँपेवित कवेत होए,ताहिमे नर  
 करिता प्रसुखता सँ स्थान रँनौनक हें/ तेँ हिनक करिता  
 अपीन कवेत देखाअत आओत/ प्रजार्तँत्रमे शिअ आहम डेक,आ  
 से ओहवे रििकासकाज एँ माधाम होती/एम्हवका समाजमे  
 शिअक कमी सँ सामाजिक मुखा धावामे पडुआयन समाज  
 अधिगम सुव धवि नहिँ पल्लच पौननि अड्डि/ तेँ कारा केव माधाम  
 सँ अपन समाक दृष्टिकोण वखरामे समर्थ भेनाह अड्डि/ पाँति  
 दुअरा अड्डि -:

..... प्रजार्तँत्रक वीठ जे शिअ

तेकबो हानत नीक कहाँ

শিক্ষা রঁঠন দূ ভাগমে

সমতাক দর্শন রঁনত কেনা .. ❖.....!

সমাজমে স্বাভাভাদীক ৭৭ ম্ শ্বমৃত ভাবত রর্ষ ম হম সরঁ ঙ্গী,ম্বদা

সঁরিধানকে সূত্রত নক্ষ্য -সমানতাক স্বধিকাব স্বাভ্রধবি নহঁ

ভেনেক/ একোঠা স্বফসব স্বা বাজনেতা স্বপনা রঁচাকঁ সবকাবী

পাঠশানামে পঠরঁত নহঁ ঙ্গি/ প্রাভ্ররেঠ কানুঁঠ স্হনমে নহঁ

তঁ রিদেসঁক মহঁগ স্হনমে পঠরঁত দেখাভ্রত ঙ্গি/ কবি পাঁতি

গঠেত ঙ্গি-: ভনহঁ জাতি স্বা ধর্ম স্বনেক

দেশমে শিক্ষা হোশ্বএ এক/

তখনে সুব- মে - সুব মিনত

মানরতা কেব রঁন মিনত //

মন্বখমে মন্বখতা বহনে স্বা মমন্ন বহনে ,সরঁহক প্রতি সদভারনা

বখনে সঁ প্রশঁসা ভেঠেঁত ঙ্গেক/ কদাচিত জোঁ স্বপনা রিশেষ

সূর্থমে নোক বহেঁত স্বষ্টি তঁ দস নোকীমে দেখাব হোভ্রঙ/ এক

দিন তঁ ঐ বঁগমঁচ সঁ নোক স্বাঁখি ম্বনি সদা নেন চনিএ জাভ্রঙ/

ତୁଁ ଏତେକ ଚାଁଞ୍ଜି- ଚାଁଞ୍ଜି କଥିକ ? କରି ସମକପତା କେବ ପଞ୍ଚଧବ  
ଛାଡ଼ି/ ତିନକ ସିବଜନ ପାଁତି ଦେଖୁ -:

..... ସଦା ରଞ୍ଜାବ ଗ୍ରା ବଂଗ ମଂଚ ଶ୍ରଦ୍ଧି

ଏକ ଶ୍ରେତ ଏକ ଜାଗତ ଶ୍ରଦ୍ଧି/

ରଞ୍ଜ ପ୍ରବାନ ଗ୍ରା ସିନସିନା ଶ୍ରଦ୍ଧି

ହ ନୋକକ ଶ୍ରେମିଠ କଥା ଶ୍ରଦ୍ଧି//.....

କୋନୁ ଦେଶେମେ ଶ୍ରମ ଶୈଞ୍ଜିକ ମଲୌତ ସରଂ ଦିନ ସଂ ଡ୍ରେକ / ପର୍ବଚ କିନ୍ତୁ

ଶ୍ରତିଶ୍ୟ ରୁଞ୍ଜିଆବ ନୋକ ଶାବିବୀକ ଶ୍ରମ ସଂ ଦୂବସ୍ଥ ଶ୍ରା ମାନସିକ

କାଜ ସଂ ନଗୀଚ ରଞ୍ଜୋନେ ବଞ୍ଚେଛୁ,ତାଛୁମେ ଚନକପନୀ ଧବି ଧୁରଂ କର୍ବେତ

କାଜ ଶ୍ରତାବେତ ସ/ ସେ ସବିପନ୍ନା ଶ୍ରଞ୍ଜିଗବ ନୋକ ଶ୍ରଞ୍ଜିଆଗସ ନୈତ

ଡ୍ରେକ/ ତାହି ଠିଶି କେଁ ଶ୍ରପନ କରିରୁ ଭାରେ କରିରବ ମହୋଦୟ ଶିଞ୍ଜକ

ଦିରସ ପବ ଏକ କାରାୟେକ ପୋଖୀ ନିଧି ଧ୍ୟାତି ଶ୍ରଜିତ କସନାଚ

ଶ୍ରଦ୍ଧି/ ଜୋନ - ରୌନିତାବ 'କ ରିରଶତାକ ସଂଗ- ସଂଗ ଦେଶେମେ ପସବନ

ଶ୍ରଦ୍ଧି, ଦନିତ- ଦମିତ ଓପ୍ପେଡ଼ିନ ,ଧର୍ମାକ୍ତା ଶ୍ରାଓବ ରନ୍ନାଭେଦ ଜହନ

সমস্যা পৰ চিত্ৰিত দেখেগাহ হেন। এক দিশে দেশেমে বৈজ্ঞানিক  
 নর- নর স্বরিক্কাব সঁ স্বভিমানমে ছুথি তঁ দোসব দিস জাদু  
 ঠোনা স্বা মাৰ ফুঁক সন সমাজমে স্বভিশোপ সঁ রাখীত সেহো  
 ছুথি। ১৪ সানসঁ কম উমেবক রঁচা নেন সৰ্শশিক্ষা স্বভিয়ান স্বা  
 রঁানরঁাডী- স্বাঁগনরঁাডী কেঁদু তথা স্বনোঁপচাবিক শিক্ষা ধবি  
 চনন,মুদা শিক্ষাকে স্রব কমতব বহনে রীচেমে ছাএ - ছাএা রঙ্গ  
 সঁ তীজন ভ' জাঙছ। গ্ৰ একঠা যক্ষ প্রশ্ন ভহ সমক্ষ ঠাঢ় ছেক।  
 ঐ সঁদৰ্ভ মেঁ মোঁনী রঁারুঁকেঁ করিতা ফুবাঙত ছেক। স্বপন  
 সঁরেদনা স্বনেকোঁ রিষয় পব কনম চনারেঁত রাজ কযনাহ স্বুত্তি।  
 সমাজকে রীচ ধার্মিক উন্মাদ স্বা সাম্প্রদায়িক তনাউ রঁঠেত  
 দেখ স্বধাবরাদী কপবেখা স্বানরঁাক নে স্বাৰ্তনাদ সঁ স্বজস্র করিত  
 বসরানা রঁহেনে ছুথি। হিনক স্বাস্ব করিক পহচানকে কিযো  
 প্ৰীজন করি কহি দিশ্ব তঁ স্বনস্বহীত নাগত। পৰ্য্যারবণ সঁত্তনন স্বা  
 সঁবক্ষণ নেন জন জঁগন মেঁ রঁচেরাঁক নেন স্বপনা করিতা সঁ  
 পাঠককেঁ উপ্লেবিত কবেত ছুথি। কেন্দ্রবীয করিতা 'স্বক্ষয় পাএ'

म रूठ पकठोस रूत कहरूमे करि श्री पासरान जी समर्थ  
भेनाह श्रुति। ङा पोथी सागवमे गागव भवेक काज केनक  
हेन। ऐ सँ मेथिनी सालिह केँ श्रुत्य उँडाव भवन आ ऐ श्रुत्य  
पात्र सँ हीवा चुनि- चुनि श्रुतौँ श्रुपने श्रुपमे गौवर रौध कवरँ  
से रिसरूस जगेत य। पोथिमे मुद्रण / ठँकण ठाम - ठाम  
श्रुत्य पाएन गेन श्रुति।

श्रुपन मंतरा [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) पब पठाँड।

২.৪. শ্বাচার্য বামানন্দ মঁডন- জননাযক কর্পূবী ঠাঙ্কব



শ্বাচার্য বামানন্দ মঁডন

## जननायक कर्पूबी ठाकुर

मिथिना के नान आ गबीर के मसीहा जननायक कर्पूबी ठाकुर हज्जाम समाज के अति निर्धन परिवार में माता वामद्विनाबी देरी के गर्भ से 24 जनरबी 1924 के दिन पैदा होयन बहे। पिता गोह्मन ठाकुर हजामत के काज कबैत बहथिन/हिनकब गीर आण कर्पूबी ग्राम से रिखात हैय/जे रिहाव के मिथिनीचन में अरस्थित जिना समस्तीपुव में एकठा गीर पितौमिया हैय।

जननायक कर्पूबी ठाकुर मैट्रिक प्रथम श्रेणी से पास भेनन त नानकब रौरूजी, कर्पूबी ठाकुर के संग अचना गृहसे के जूहा खुशी से गेनन आ कहनथिन-मानिक हमब रैँठा मैट्रिक पास केनक हैय/तो मानिक कहनथिन-रूँडा खुशी के रात हैय/आरा कर्पूबी पहिने हमब पीर दरार्रा/केतो पढ़ गेना

ଠେଁୟ ତ କି ଚମନୀ କେ ପୀର ତ ଦରାରେଁ କେ ଶ୍ରୀ ପଡ଼ତ/ ମାନିକ କେ  
ଞ୍ଜ କଦମ କର୍ପୂରୀ କେ ମାନ ମର୍ଦନ କବେ କେ ନେନ ବହେ/ ପର୍ବଚ କର୍ପୂରୀ  
ନ ତ ଜରାଁଁ ଦେନନ ନ ଡିମୋବନାଞ୍ଜୁଡ ଭେନନ/

ଜନନାୟକ କର୍ପୂରୀ ଠାକ୍ତବ 1942 ମେଁ ଗାଁଧୀ ଜୀ କେ ଶ୍ଵାନ୍ତାନ  
ପବ ଭାବତ ଛୋଡ଼ୋ ଶ୍ଵାନ୍ତାନେନ ମେଁ ଭାଗ ନେନନ/ଜେନ ଗେନନ/

ରାଁଦ ମେଁ/1967 ମେଁ ରିଠାବ କେ ଓପମ୍ଵଧାର୍ମତ୍ରୀ ସହ ଶିକ୍ଷା ମଂତ୍ରୀ  
ରନନନ/ ମେଁଡ଼ିକ ମେଁ ଶ୍ଵିଗ୍ରେଜୀ ପାସ କବେଁ କେ ଶ୍ଵନିରାୟତା କେ  
ସମାପ୍ତ କେଁନନ/ଦରନ ଛଚନ ସମାଜ କେ ନେଁୟକା କେ ଓଚ ଶିକ୍ଷା  
ପ୍ରାପ୍ତ କବେଁ କେ ବାନ୍ତା ଧୋନ ନେନ/

1971 ମେଁ ସ୍ଵଧାର୍ମତ୍ରୀ ହୋୟନା ପବ ମେଁଡ଼ିକ ତକ କେ ସ୍ଵନ୍ତନ  
ଫୀସ ମାଫ୍ କେଁ ଦେନନ/କି ଗବୀରଁ କେ ରଞ୍ଚା ଫୀସ କେ ଶ୍ଵଭାର ମେଁ ଭୀ  
ପଟାଞ୍ଜା ଜାବୀ ବଧ ସକେ/

मृगवी नान आयोग के अन्वर्षसा के नागू के के  
सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़ा के सबकाबी नौकबी मे  
26प्रतिशत आवरण नागू केनन/जेमे आर्थिक रूप से कमजोब  
सरर्ण के बी 03प्रतिशत आवरण देनन/तयियो आवरण  
रिबोधी हिनका गानी देनक।

पर्वच जननायक कर्पूवी ठाकुर हमेशा दर्रन कचन आ गबीर के  
आराज र्रनन बहनैन।

1974के छत्र सह लोकनायक जयप्रकाश आंदोनन मे  
भाग ने नेनन/र्राद मे/977मे रिहाब के मुखामंत्री र्रननेन।

मेथिनी के सर्रिधान के अष्टम अन्नसूची मे शामिन कबे  
के नेन भावत सबकाब के पत्र निखनेन।

কেন্দ্রীয় সবকাব পত্র সংখ্যা-০৩ শ্রাবি-১০/১৭৪কা-৪কেঁপ দি-  
২২/১২/১৭৭৭

৩ পত্র এক জখা সে মেঁথিনী কে সঁরিধান কে শ্বগ্গম শ্বন্বসূচী  
মেঁ শৌমিন কে নেন রীজাবোপণ হেঁয়।

তরঁ মেঁথিনী ২০০৩-২০০৪মে সঁরিধান কে শ্বগ্গম শ্বন্বসূচী মেঁ  
শৌমিন ভেন।

২৩মার্চ ১৭৭১কে শ্বপন ম্বখামঁত্রী কানি মেঁ মিথিনা রিশুরিছানয  
কে স্থাপনা কে নেন রিহাব রিধান পবিষদ মেঁ রজরা দেনন শ্বা  
শ্বগসে পহিনে/১৭৬৭মে মিথিনা রিশুরিছানয কে নেন যূজীসী কে  
শ্বধাঞ্চ সে রার্ভা কেঁনে বহথিন। রাঁদ মেঁ/১৭৭২মে মিথিনা  
রিশুরিছানয কে স্থাপনা ভেন।

1978 मे रिहाव पंचायत बाज के चुनाव कबैनन/श्वा दनित  
शौषित कमजोव रद्दा मे चुनाव के सहावे नया नेत्रर कर्ता  
पैदा केनन/

21 अर्पेन/१९७९तक रिहाव के मुखामंत्री  
बहनन//१९७९वरी/१९८८ के अचानक हृदय गति रूंद होयना के  
कावण सदा के नेन सँसाव से रिदा हो गेनन/

नोग न्नका प्रेम से जननायक प्रकारेते बहे/

1988मे रिहाव सबकाव न्नका सम्मान मे न्नकव गौर  
पितौमिया के न्नकव नाम पव कर्पूरी ग्राम घोषित केनक/

भावत सबकाव सम्मान मे डाक ठिकठ जावी केनक/

रिहाव सबकाव रूकसव मे रिधि महारिष्ठानय, मधेपुवा मे

চিকিসো মহারিছানয়, দবৰ্ভুগা শ্ৰা সমস্তীপিব মে ঞ্ৰস্পতান  
ক্ষনকা নাম সে স্থাপিত কেনক।

ভাবত সবকাব দবৰ্ভুগা-শ্ৰমৃতসব নেন জননাযক এক্সপ্ৰেস  
চনেনক।

শ্ৰাণ জননাযক কৰ্পূবী ঠাঙ্কব হমবা সভ কে রীচ নে ঙ্ৰেথ  
পৰ্বচ ক্ষনকব রিচাব শ্ৰাণযো জিদা হেঁয শ্ৰা নোগ কে বাহ  
দিখরৈত হেঁয।

-শ্ৰাচার্য বামান্দ মঁডন, সামাজিক চিতক, গৌশানা  
চৌক,সীতামড়ী।

শ্ৰপন মঁতরা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব পঠাঙ।

୨.୭. ପବମାନନ୍ଦ ନାମ କର୍ମ-ସୀଧ



ପବମାନନ୍ଦ

ନାମ





କର୍ମ

## ସୀଧ

ଶ୍ରବେ ହେବ ରୌଆ, କାନ୍ ନାହି ! ଦାଦୀ ତରୁତ ଶ୍ରବେକ ଦୁଧକ  
 ରୌତନ ନାରି ବଲେ ଛାଧି / ନୀନାଜୀକ ଧକାବ ଭନସା ଘବକ ଦିରାବ  
 ସଁ ଠକବାଞ୍ଚତ ଘବ ମେ ଗୁଞ୍ଜି ବଲେ ଛନ / ଲନକା ଡାଧ ମେ ଦୁଧକ  
 ରୌତନ ଛନ ଜାହି ମେ ସିବଗବମ ଦୁଧ ବାଧେତ ଛନାହି ଶ୍ରା ସୋମା ମେ  
 ହର୍ଷ ପବ ରୈସନ ଲନକ ପୋତା ବୋଲେ କାନ୍ଧେତ ଛନ / ନୀନାଜୀ  
 ଶ୍ରାରାଜ ଦହ ବୋଲେ କେ ହୁସନାରକ କୋଶୀଶି କହ ବଲେ ଛନାହି /  
 ସୁଦା ବୋଲେ ଚୁପ ହୋରାକ ନାମ ନାହି ନେତ ଛନ / ନୀନାଜୀ କଠେତ  
 ଛନାହି - ରୈସ ହେବ ନାନ ! ଚୁପ ଭହ ଜାଓ ! ଦୁଧ ଗବମ ଭହ ଗେନ  
 ଶ୍ରାଧି / ରୈସ ଶ୍ରାରି ଗେନଲ୍ଲ / ନୀନାଜୀ ରୌତନ ମେ ଦୁଧ ଗବମ କହ  
 ଶ୍ରାରି ବଲେ ଛନାହି କି କଢକ ଶ୍ରାରାଜ ମେ ଲନକବ ପୁତୋଲ୍ଲ କଲେନି  
 - ମାଁ ଜୀ ! ଶ୍ରାଣେ କୀ କହ ବଲେ ଛା ? ହେ ଭହ ଗେନ / ଏକଲ୍ଲ ଠା  
 କାଜ ଶ୍ରାଣେ ଠଗ ସଁ ନାହି କବେତ ଛା / ଦେଖୁ ତହ ବୋଲେ କେନା  
 କାନି ବଲେ ଶ୍ରାଧି / ବୋଲେ କେ କୋବା ମେ ନହ ଶ୍ରାପନା ସାନ୍ଧ ମାଁ

पब जोब-जोब सँ कहह नगनीह / नीना जी कहनि - ❖  
 कनिया ! रौंथाक ह्रथ नागन छन तेँ हम भनसा घब मे रौंथाक  
 नेन दूध गबम कबैत छनसँ / देखु दूधक रौंतन हमबा  
 हाथहि मे श्रुति / एहि पब स्वसमार्जी कहनि, ❖कनि देखु  
 तह रँछाक की हानत भह गेन श्रुति / नीचा मे नोबे मोबे  
 कोना कानि बलन श्रुति / हमबा पाहु मे रँछा पब श्रुतँ की धान  
 दैत छी पता नहि ? नीनाजीक चेहवा नठँकि गेन था ओ किछु  
 कहह चाहेत छनीह तखनहि स्वसमार्जी कहनि - माँ जी, श्रुतँ के  
 सहाँगा देराक कोनो जकबत नहि श्रुति / नीनाजी कहनि -  
 नहि कनिया ! कनि सोचु तह हम भनसा घब मे रौंथाक नेन  
 दूध गबम कबरक नेन गेन छनसँ तेँ पर्नंग सँ नीचा बखने छनसँ  
 / पर्नंग पब सँ गिबरक डब छन / हम नीचा मे चठँगा रिँछा कह  
 रौंसेने छनसँ , मुदा ओ चठँगा पब सँ रँत्तव खेनह नागन / रँछा  
 श्रुति तह हाथ पाजब तह मावरँ कबतेक / केकबो नहि

ଦେଖନକ ତହ କାନହ ନାଗନ / ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀକ ନଜବି ଘବକ ଏକ  
 କୋନ ମେ ବାଖନ ରଞ୍ଚାକ କପଡ଼ା ପବ ଗେନ / ଡର୍ବତ ଓ କହେନି -  
 ❖ ମାଞ୍ଜୀ ! ଖାନ ଦିନ ତହ ବୋହେନକ ଛୋଟ-ଛୋଟ କପଡ଼ା ଖଲୌ ସେଲୋ  
 ସାଫ୍ କହ ସ୍ଵଖା ଦେତ ଛନମ୍ମାଁ ସ୍ଵଦା ଖାଞ୍ଜ ତହ ଖଲୌ ଓହୋ ଛୋଡ଼ି ଦେନମ୍ମାଁ  
 ଖଞ୍ଜି / ସଭଞ୍ଜୀ କପଡ଼ା ଓହିନା ବାଖନ ଖଞ୍ଜି / ହେବା ତହ ସମମ୍ମ ମେ  
 ନହି ଖାରି ବହେନ ଖଞ୍ଜି ଜେ ଭିନସବ ହେ ସଭଞ୍ଜୀ କାମ ନିପଞ୍ଜୀ କହ  
 ଜାଧତ ଛି / ଦିନ ଭବି ଖଲୌ କି କବେତ ଛି ? ଏକଞ୍ଜୀ ଛୋଟ  
 ନେନା କେ ନହି ସଞ୍ଜାନି ପାରୈତ ଛି/ସ୍ଵସ୍ଵମାକ କଞ୍ଜୁ ରଚନ ସ୍ଵନି  
 ନୀନାଜୀକ ଦିନ ପବ ଗଲୌବ ଛୋଟ ନଗନି / ମ୍ମନକା ମନ ମେ ଏକ  
 ହହାନ ଓଞ୍ଜି ବହେନ ଛନ / ନୀନାଜୀ କହେନି - ❖ କନିଆଁ ! ଖଲୌ  
 ଞ୍ଜ କି କହି ବହେନ ଛି ? ଖଲୌ କେ ପତା ଖଞ୍ଜି ଜେ ଦିନ ଭବି  
 କୋନ-କୋନ କାଜ ହୋଧତ ଖଞ୍ଜି ? ଖସଗବେ କଧନମ୍ମା ରୌଖାକ ନେନ  
 ଦନିଆ ରଞ୍ନା କେ ଦେତ ଛି ତହ କଧନମ୍ମା ବାଗି ରଞ୍ନା କହ ର କଧନମ୍ମା  
 ଦୁଧ ଦେତ ଛି / ରଞ୍ଚାକ ମାନିଶି କବନାଞ୍ଜ, ନହେନାଞ୍ଜ ସଭ ଖସଗବ  
 କବେତ ଛି / ଖଲୌ କୋନା ସମମ୍ମର ଜେ ଖସଗବେ ଞ୍ଜ କାମ କତେକ

कठिन सँ होयत अछि / स्वभमाजी कहनि -  माँजी ! रँस  
 कब, हमबा सभ पता अछि जे भवि दिन कतेक काज होयत  
 अछि / घबक माडू पोछाक नेन दाग्र बाखि देने छी /  
 भिनसबक नाशता आ तबकावी हम रँना कह जायत छी / फेब  
 अहाँक नेन कौन काम रँचन बहेत अछि / देखू तह आग्र  
 रँचाक की लान भेन अछि / नागेत अछि जे अहाँ रौआ के  
 आग्र नेहेरो नहि केनअँ अछि / रौआ आग्र ओहिना रँदा  
 कपड़ा पहिबने अछि / भवि दिन मे अहाँ एकठा कपड़ो नहि  
 रँदनि सकनअँ / आ सभ अनि नीनाजी के नहि बहन गेननि / ओ  
 कहनि -  कनिया ! आग्र भिनसबे सँ हमब शीबि रौआब  
 सँ रँचि बहन अछि / एहि दशा मे रँचाके सँभनाग्र कतेक  
 कठिन होयत अछि से अहाँ नहि रँमोत छी की ?  आ अनि  
 स्वभमाजी कहनि -  माँजी ! रँस कब , जखन अन्न तखन  
 कौनो ने कौनो रँहाना रँना देत छी / काम कबराक अछा

ନାହିଁ ହୋସତ ଶୁଦ୍ଧି ତଳେ କମ୍ପ ହେ ବୋଲେ କେ ଡେ-କେସବ ମେ ବାଧି  
 ଦେତ ଛାଁ । ଶ୍ରୀ କାହି ବୋଲେ କେ କୋବା ମେ ନହ କେ ଶ୍ଵପନା  
 କୋର୍ଥବୀ ମେ ଚାନ୍ତି ଗେନାହିଁ । ଭନସାଘବ ମେ ନୀନାଜୀକ ଶ୍ଵାନ୍ତି ସଁ  
 ଢର-ଢର ନୋବ ଗିବହ ନାଗନ । ସ୍ଵମନ ମନ ସଁ ଓ ଶ୍ଵପନା କୋର୍ଥବୀ ମେ  
 ରିଞ୍ଚୋନା ପବ ନେଠଁ ଗେନାହିଁ । ଶ୍ଵାନ୍ତି ଭିନସବେ ସଁ ନୀନାଜୀକ ତରୀୟତ  
 ଖବାରଁ ଢନ ଠେସୋ ଭବି ଦିନ ବୋଲେକ ପାଢୁ-ପାଢୁ ଦୌଢେତ ଢନାହିଁ  
 । ଏହି ଢାନ ମେ ସ୍ଵସମାଜୀ ଏକମ୍ପ ରେବ ନାହିଁ କଲେଖିନ ଜେ ଶ୍ଵଳାଁ  
 କୋନୋ ଦରାନ୍ତ ନେନମ୍ପ ଶୁଦ୍ଧି କି ନାହିଁ ? ଓନା ଶ୍ରୀ ନର ରାତ ନାହିଁ  
 ଢନ । ନୀନାଜୀକ ମନ ଠୀକ ବହେ ର ଖବାରଁ ସ୍ଵସମାଜୀ ତାନା ମାବହ  
 ମେ କୋନୋ କସବି ନାହିଁ ଢୋଢେତ ଢନାହିଁ ।

ସ୍ଵସମାଜୀ ବୋଲେ କେ ଶ୍ଵପନା କୋର୍ଥବୀ ମେ ନହ ଜା କେ ପୂବା କପଡ଼ା  
 ରଁଦାନି ଦେନାଖିନ । କପଡ଼ା ରଁଦାନି ପନନା ପବ ନେଠାଁ ଦେନାଖିନ ଶ୍ଵା  
 ଦୁଧକ ରୌତନ ଓକବ ଢାଧ ମେ ପକଡ଼ା ଦେନାଖିନ । ବୋଲେ କେ  
 ଦୁଧକ ରୌତନ ପକଡ଼ା କହ ଶ୍ଵପନା ରିଞ୍ଚୋନା ପବ ନେଠଁ ଗେନାହିଁ ଶ୍ଵା

सभ दिन जकाँ फोन पब अणपना माय सँ कहनथिन, ✨  
 माय अखन घब एनकाँ अछि तह फेब अाँघा घब मे तमाशा छन /  
 रौआ फर्ष पब हख सँ तड़पि बहन छन / जोब-जोब सँ कनेत  
 छन / अाँघा तह अाँघोबो हद भह गेन, अाँघा बोहन के कपड़ो  
 नहि रँदनन गेन छन / हम की करु? ओ नहि तह रँचाक खान  
 बाखेत छथिन आ नहि घबक कोनो काम कबेत छथिन /  
 अाँघाक माय कहनि - रूँठिया भवि दिन मोर्राँघन चनारैत  
 हेतीह नहि तह अाँघेत हेतीह /  
 रँचाक देखभानक जिम्मेरावी तह दादी पब बहैत अाँघि खास  
 कह जेकब माय नौकवी कबेत अाँघि / किएक तह ओ भवि  
 दिन अणपने ओफिस मे बहैत छथि आ साँम मे थकन माबन  
 घब अारैत अाँघि / अाँघाक अणपन भडास निकानेत छनीह आ  
 माय सँ कबैत छनीह जे माय अार हम की कवी ? भिनसबे  
 नाशता रँना कह आ दाँघा के काम समना कह अणपना नौकवी

ପବ ଭାଗୁ / ନୌକବୀ ପବ ସଁ ଘବ ଶ୍ଵାରେତ ଛୀ ତଲନ ମାଁଜୀକ ରଁହାନା  
 ସ୍ଵର୍ନେତ ଛୀ /ସଭ ଦିନ ଓ କୋନୋ ନେ କୋନୋ ରଁହାନା ଜକ୍ଵବ ରଁତାରେତ  
 ଛୁଧି / ଶ୍ଵାଞ୍ଜ ଦେହ ତୋଡ଼ି ବଲନ ଶ୍ଵଚ୍ଛି ତହ ଶ୍ଵାଞ୍ଜ ରୌଖାବ ଭହ ଗେନ  
 ଶ୍ଵଚ୍ଛି / ସର୍ଦ୍ଦ ଦିନ ଡ଼ାହେ ଡ୍ରାମା ନାଗନ ବ଼େତ ଶ୍ଵଚ୍ଛି / ଏହି ପବ  
 ସ୍ଵଷ୍ଠମାଜୀକ ମାଧ କଲନଧିନ - ଶ୍ଵବେ ରୈଠୀ ! ଞ୍ଵା ସର ରଁହାନା  
 ହୋଧତ ବ଼େତ ଶ୍ଵଚ୍ଛି / ଶ୍ଵଚ୍ଛା ଞ୍ଵା ରଁତାଞ୍ଜ ଜେ ପାମ୍ଳନକ ତରଁଧିତ ସର୍ଦ୍ଦ  
 ଠୀକ ଠାକ ଶ୍ଵଚ୍ଛି ନେ ? ଏହି ପବ ସ୍ଵଷ୍ଠମାଜୀ କଲନଧି - ଠାଁ ମାଁ ,  
 ଠୀକ ଶ୍ଵଚ୍ଛି ସ୍ଵଦା ଶ୍ଵାଞ୍ଜ ଓଫିସକ କାମ ସଁ ରାଁହେବ ଗେନ ଛୁଧି / ନଗଭଗ  
 ଏକ ସଁଠୀ ଦୂବ ମାଧ-ଧୀ ସର୍ଦ୍ଦ ଦିନ ହୋନ ପବ ରାଁତ କବୈତ ଛୁନୀହ /  
 ଭବି ଦିନ କୀ ଭେନ ତକବ ପୂବା ଜାନକାବୀ ଦେନାକ ରାଁଦ ମୋରାଞ୍ଜନ  
 ରଁନ୍ଦ ହୋଧତ ଛୁନ / ସ୍ଵଷ୍ଠମାଜୀକ ମାଧ ଶ୍ଵପନା ବିଶ୍ଵତେଦାବୀ ମେ କ଼େତ  
 ଛୁନୀହ ଜେ ହେବ ରୈଠୀ ସାସ୍ଵବ ମେ କତେକ ମେଲନତ କବୈତ ଶ୍ଵଚ୍ଛି /  
 ଘବ ସଁଭାନନାଞ୍ଜ ଓଫିସ ଜେନାଞ୍ଜ କୋନୋ ଶ୍ଵାସାନ ରାଁତ ନହି ଶ୍ଵଚ୍ଛି /  
 ନିନାଜୀ ଶ୍ଵଧନ ମାଧ ପକଡ଼ନେ ରିଞ୍ଚୋନା ପବ ନେଠନ ଛୁନୀହ / ଜଧନ

ସ୍ଵପ୍ନାଜୀ ଶ୍ଵପନା ମାଧ୍ୟ ସଁ ରାତ କବେତ ଢୁନିତେ ତখন ଓ ସର୍ ରାତ  
 ସ୍ଵନେତ ଢୁନିତେ / ସ୍ଵଦା ଶ୍ଵପନା ଦିନ ପବ ଚାଥ ବାଧି ଚୁପଚାପ ଢୁନିତେ /  
 ଶ୍ଵଚାନକ ଜ୍ଞାନକା ଦିମାଗ୍ ମେ ଶ୍ଵାଧନ ଜେ ଶ୍ଵପନ ରୈଠୀ ମନୋଜ ସଁ  
 ସଭଠୀ ରାତ କହୀ / ହେବ ଜ୍ଞାନକା ଦିମାଗ୍ ମେ ଶ୍ଵାଧନ ଜେ ରୈଠୀକ  
 କହନା ସଁ କିଛି ନାହିଁ ହୋସତ / ଓ ଶ୍ଵପନା ଘବରାଣୀକ ରାତ ସ୍ଵନତ  
 ନାହିଁ କି ହେବ / ହେବା ରାତ ପବ ଜ୍ଞାନକା ରିଶ୍ଵାସ ହେତନି କୀ ନାହିଁ  
 ? ନୀନାଜୀକ ଶ୍ଵାର ଏହେସାସ ଭେନି ଜେ ହେ କତରଞ୍ଜ ଘବ ମେ କାଜ  
 କବରଁ ହେବ କୋନୋ କଦବି ନାହିଁ ହୋସତ / ଶ୍ଵାଞ୍ଜ ତହ ଦେହ ତୋଡ଼ି  
 ବହେନ ଶ୍ଵଚ୍ଛି ଶ୍ଵା ରୌଖାବ ସେହୋ ଶ୍ଵଚ୍ଛି ଠେସୋ ବୋହେନ କେ ଭବି ଦିନ  
 ସଞ୍ଚାନକ୍ସ / ଘବକ କାମ କେନକ୍ସ ସ୍ଵଦା କନିଧା କେ ତହ ହେବ ଗନତୀ  
 ଦେଖା ଦେତ ଢୁନେନ / କତେକୋ ରୈବ ମନ ଭେନି ଜେ ଏହି ଠାମ ସଁ  
 ଦୋସବ ଠାମ ଚନି ଜାଠ ସ୍ଵଦା ହେବ ସୋଚେତ ଢୁନିତେ ଜେ ଗାମ ମେ  
 ସେହୋ ଘବ ଠୀକ ଠାକ ନାହିଁ ଶ୍ଵଚ୍ଛି କୋନ ଠାମ ଜାଧ ? ଞ୍ଜ ସୋଚି  
 ଚୁପଚାପ ରୈଠୀ-ସ୍ଵତୋକ୍ସ ନଗ ମନ ମାବୀ ବହେତ ଢୁନିତେ /

ଏକ ଦିନକ ରାତ ଶ୍ରଦ୍ଧି ସ୍ଵସ୍ଵମାର୍ଜୀକ ଓଫିସ ରିନ୍ଦ ଛନ ଓ ଘବ ପବ  
 ଛନିତେ / ବୋଲେନ ଶ୍ଵପନା ମାସ ନଗ ଖେନାଞ୍ଜତ ଛନ / ନିନାଜୀ ଶ୍ଵପନା  
 ଘବ ମେ ରୈସନ ଛନିତେ ତখন ଛନକା ପ୍ରବାନ ରାତ ଯାଦି ଶ୍ଵାରହ ନାଗନ  
 ଜେ ଏକଠା ସମୟ ଛନ ଜଖନ ଖୁର ଦେଖିତ ଛନଖି ଜେ ରିଚା ଜଖନ  
 ମୈଘ ଭହ ଜାୟତ ଶ୍ଵା ଶ୍ଵପନ ମାଥ ଓଠା ନେତ ତଲେନ ହେମ ତୀର୍ଥ ରଗୈବେ  
 ଜାୟର / ଓନା ନିନାଜୀ କେ ଘୁମରାକ ରିଡୁଡ ଶୈକ ଛନିନି ମୁଦା  
 ଘବକ ଜିମ୍ମେରାବୀ ଛନକା ରାହନେ ବଢେତ ଛନ / ଜଖନ ରିଚା ଛନିତେ  
 ତখন ଛନକବ ମାସ କଢେତ ଛନଖିନ ଜେ ଶ୍ଵଖନ ପଢୁ, ପଢାଞ୍ଜ ପୂବା  
 କହ ନିଶ୍ଚ ରିଶ୍ଵାତେକ ରାଦ ଘୁମର / ମାସ ରାଉଁଜୀକ ଦେଖ-ବେଖ ମେ  
 ପଢାଞ୍ଜ ନିକ ଜକାଁ କେନେ ଛନିତେ / ରିଶ୍ଵାତେକ ରାଦ ଛନକା ନୌକବୀ  
 କବରାକ ଞଢୁଆ ଭେନିନି, ମୁଦା ସାସ- ସସ୍ଵବ ନୌକବୀକ ନେନ ସାଞ୍ଵ  
 ମନା କହ ଦେନଖିନ / ରିଶ୍ଵାତେକ ରାଦ ଜିମ୍ମେଦାବୀ ଖୁରକ ଜଗତ ନହ  
 ନେନକ / ସାସ୍ଵବ ମେ ସାଓଠସକ ତାନା, ଘବକ କାଞ୍ଜ, ବିଶ୍ଵତେଦାବକ  
 ଶ୍ଵପେଞ୍ଜା ଶ୍ଵା ପତିକ ହବମାଞ୍ଜାଶି ଧିବେ-ଧିବେ ନିନାଜୀ କେ ଶ୍ଵହାବ  
 କୋଠବୀ ମେ ଧକେନ ଦେନେ ଛନ / ଭିନସବ ସଁ ସାଁମ ଧବି କାମ କବୈତ-

कवेत थकि जायत हुनीह / रेँठीक जन्म भेनाक रँद घबक  
 काज आ रेँठीक देखभान मे समय रीतेत हुन / रेँठी जखन  
 रिश्वाहक नायक भेन तहन स्ननक रिश्वाह नीक खान दान मे  
 केनीह / स्ननका रेँठी नहि हुननि तेँ सदिखन मनान हुननि जे  
 हमबा रेँठी नहि श्रुति / ओ सोचेत हुनीह जे रेँठी नहि श्रुति  
 मुदा रेँठी तह श्रुति / रिश्वाहक रँद रेँठी जकब मिन जायत  
 / रँदक हम रेँठी जकाँ बाखरँ / मुदा नीनाजीक ए श्रवमान  
 स्वषमा के एनाक रँद ठुँठि गेन / ओ तह श्रपना द्वनिया मे मस्र  
 हुनीह / सास्व मे स्वषमा एकठाँ सृहन मे काज कबह नगनीह आ  
 श्रपना द्वनिया मे मस्र बहेत हुनीह / भिनसबक किछु काम कह  
 ठिँफिन मे श्रपन खाना पेक कह नेत हुनीह आ साँम के आरेत  
 हुनीह / साँम मे घब एनाक रँद फोन पब श्रपना माय सँ घँठी  
 रँत कवेत हुनीह / घबक सर काज नीनाजी पब हुन / स्वषमाजीक  
 एनाक पहिने तह स्ननका किछु बाहेत हुन / कখনो ससेँग मे

ଚନି ଜାୟତ ଛୁନିତେ ତହ କখনମ୍ମ ଶ୍ଵବୋସ-ପଢ଼ୋସ ମେ ରାତ କହ ନୈତ  
 ଛୁନିତେ / ମୁଦା ଶ୍ଵାର ପୋତାକ ଜନ୍ମ ଭେନାକ ରାଦ ସଭଠା ଜିମ୍ମେଦାବୀ  
 ନୀନାଜୀ ପବ ଶ୍ଵାରି ଗେନ ଛୁନ / ରଞ୍ଚା କେ ମାନିଶି କବନାଞ୍ଜ,  
 ନେନୋଞ୍ଜ, ଓକବ କପଡ଼ା ସାଞ୍ଵ କବନାଞ୍ଜ ଶ୍ଵା ଖାନା ଖିନୋଞ୍ଜ ସଭଠା  
 କାଜ ହିନକା ପବ ଛୁନିନି /

ଏକ ଦିନକ ରାତ ଶ୍ଵଠି ନୀନାଜୀ ଶ୍ଵପନା ଶ୍ଵତୋମ୍ମ ସଁ କହେନିନ -  
 କନିସା ଛୁଞ୍ଚିକ ଦିନ ଘବକ କାଜ ମେ କିଢୁ ଚାଞ୍ଚ ରଞ୍ଚା ଦେତମ୍ମ ତଲେନ  
 ହେମବା କିଢୁ ଶ୍ଵାବାମ ମିନ ଜାୟତ / ଭବି ଦିନ କାଜ କବୈତ-କବୈତ  
 ଥାକି ଜାୟତ ଛୁ / ଏହି ପବ ସ୍ଵସମାଜୀ କହେନିନ - ମାଁ ଜୀ, ଶ୍ଵଲୌ  
 ତହ ଜାନରେ କବୈତ ଛୁ ଭବି କାଜ କବୈତ-କବୈତ ହେମ ଥାକି  
 ଜାୟତ ଛୁ ଶ୍ଵା ସପ୍ତାତ ମେ ଏକ ଦିନ ତହ ଶ୍ଵାବାମ କବରାକ ନେନ  
 ଛୁଞ୍ଚି ମିନୈତ ଶ୍ଵଠି / ଶ୍ଵମ୍ମ ଦିନ ଶ୍ଵାବାମ ନାହି କବୀ ତହ ଫେବ ଶ୍ଵାଞ୍ଚ  
 କୋନା କାଜ କବର / ଶ୍ଵଲୌ ତହ ଭବି ଦିନ ଘବ ପବ ବଢ଼ୈତ ଛୁ / ଶ୍ଵଲୌ

ତହ ଘବକ କାଜ ସଂଭାନି ସକେତ ଛା / ସ୍ଵଷ୍ଠମାଜୀକ ଗ୍ରା ରାତ  
 ମାନକା ଡୀବ ଜକାଁ ନାଗନ / ଓ ସୋଚେତ ଛନୀହେ ଜେ ନୌକବୀ କବନାଞ୍ଜ  
 କେ କାଜ କହେନ ଜାୟତ ଶ୍ଵଞ୍ଚି ଶ୍ଵା ଘବକ କାଜ କେ କୋନୋ  
 ଶ୍ଵହମିୟତ ନହି ଶ୍ଵଞ୍ଚି କୀ ? ଶ୍ଵାର ତହ ନୀନାଜୀ ରଞ୍ଜକ ନେନ  
 ନୌକବାନୀ ଭହ ଗେନ ଛନୀହେ / ଭବି ଦିନ କାଜ କର୍ବେତ ବମ୍ମା ଜାହି  
 ମେ କୋନୋ ଗନତୀ ଭହ ଗେନ ତହେନ ରାତ ସ୍ଵନ୍ନ / ମନ ଖବାର ବହେ ରା  
 ନୀକ ଘବକ ସଭଞ୍ଚା କାଜ କବନାଞ୍ଜ ଶ୍ଵାରଶ୍ଚକ ଛନ / ମନ ଖବାର  
 ବହେନାକ ରାରଜୁଦ ଭବି ଦିନ ବୋହେନକ ଦେଖଭାନ କବନାଞ୍ଜ, ବୋହେନକ  
 ଖାନା ରଞ୍ଜେନାଞ୍ଜ ଶ୍ଵାଦି ସଭଞ୍ଚା କାଜକ ଜିୟମେଦାବୀ ନୀନାଜୀ ପବ  
 ଛନ / ବାତିକ ଖାନାକ ରାଦ ବୋହେନ ତିନକା ନଗ ସ୍ଵତେତ ଛନ କିଏକ  
 ତହ ବାତି ମେ ଓ ଦୁଧ ପୀରାକ ନେନ ଓଠେତ ଛନ / ଏକ ବାତିକ ରାତ  
 ଶ୍ଵଞ୍ଚି ବୋହେନ ନୀନ ମେ ଛନ ସ୍ଵଦା ନୀନାଜୀକ ଶ୍ଵାଞ୍ଚି ସଂ ନୀନ ଗାୟର ଛନ  
 / ରିଞ୍ଚୋନା ପବ ନେଠନ କିଞ୍ଚୁ ସୋଚି ବହେନ ଛନୀହେ / ନୀନାଜୀ ସୋଚେତ  
 ଛନୀହେ ଜେ ଶ୍ଵାର ରର୍ଦାଶ୍ଚିତ ନହି ଭହ ବହେନ ଶ୍ଵଞ୍ଚି / ଶ୍ଵାର ହେମବା ଶ୍ଵପନେ

কিছু নির্ণয় নিশ্চ পড়ত / হেমবন্দী জীরনক কিছু মোন শ্ৰুতি /  
 গ্ৰ সারিত কবনাগ্ৰ হেমব কর্ত্তরা শ্ৰুতি / হেম স্বষমাক কতেক  
 তিবস্কাব সলী ? ও সোচি বহন ভনীহ জে বিশ্ৰতা কে জরঁবদস্তী  
 রাঁধি কে বখনাগ্ৰ নীক নহি হোযত শ্ৰুতি / জখন কি এক  
 পঞ্চ বিশ্ৰতা বাখহ চাহেত শ্ৰুতি থা দোসব পঞ্চ ওকব মোন নহি  
 দেত শ্ৰুতি / নীনাভীক সৰ্ব্বক রাঁধ ঠুঁঠি গেন ভন / থার ও  
 সোচনথি জে হেম এহি ঘব মে নৌকবানীক জীরন নহি জিখর  
 / থার স্বষমা কে সীখ দেনাগ্ৰ থারথক শ্ৰুতি /

এক দিনক রাত শ্ৰুতি ভিনসবে নীনাভীক ফোনক ঘঁঠী রাঁজন /  
 মোরাঁগ্ৰন পব শ্ৰপন সলেনীক নাম দেখনথিন / ফোন দেখি ও  
 কলননি থাগ্ৰ ভোবে-ভোব ফোন কেনন্দ শ্ৰুতি, কোনো খাস রাত  
 তহ নহি শ্ৰুতি ? এহি পব ও কলননি - নীনা, হেম সর গঁগা স্নানক  
 নেন রঁনাবস জা বহন ভী / হেমবা থাঁগন সঁ থাওব নোকনি  
 জেথিন / শ্ৰন্দ চনর কী ? ওনা তহ থলৌ সর রৌব কহেত ভী জে

हम कोना जायर ? घब के सँभानत ? तेयो हम सोचनल्ल जे  
 खलौँ सँ प्रष्टि नी / सँग चनर तह दूर गोठे काशी-  
 रिशुनाथक दर्शन कह नेर / ञ्ग स्वनि नीनाजीक माथ ठनकन  
 / गंगा सान केना कतेक दिन भह गेन खष्टि / घबक काज,  
 बोलेनक जिम्मेदावी खा कनियाक ताना सभ जिनगी के रौम  
 रँना देने छन, म्ददा खाञ्ज सखीक खाराज स्वनि रिँना ओ किछु  
 सोचने नीनाजी कहनीह - लौँ सखी, हम चनर / ठीक खष्टि कान्हि  
 हम सर गंगा सानक नेन रँनावस जायर / दूर गोठे रँनावस  
 जयराक नेन तेयाव भह गेनीह / खोन बाखि ओ स्वममा सँ  
 कहनखिन - कनिया, गंगा सानक खलौँक छुष्टी खष्टि की नहि ?  
 ओहि पब स्वममा कहननि - लौँ माँ जी, खखन गंगा सान खा बरि  
 नगा कह नगाताव तीन दिनक छुष्टी खष्टि / ञ्ग स्वनि नीनाजी कहननि  
 - कनिया , हमब ञ्हा होयत खष्टि जे गंगा सान कह खारि /  
 कनिया काकीक खँगन सँ कतेको नोकनि जा बलेन खष्टि /

ଶ୍ରାଘ୍ର ଭିନସବେ ହେମବ ସଖୀ ଫୋନ କେନେ ଛୁଣୀତ / ଲନକେ ସରତକ  
 ସଂଗେ ହେମ ରଂନାବସ ଜା ବତେନ ଛୁଣି / ରୌଶା କେ ସେହୋ ଛୁଣ୍ଡି ଶୋସତ  
 ଦୁବ ପ୍ରାଣୀ ମିନ ବୋତେନ କେ ସଂଭାନି ନେର / ଏହି ପବ ସ୍ଵଷମାଜୀ  
 କଲେନି - ଠୀକ ଶ୍ରଦ୍ଧି ମାଁ ଜୀ, ଏକ ଦ୍ଵଘ୍ରା ଦିନକ ତହ ରାତ ଶ୍ରଦ୍ଧି,  
 ଓଲ୍ଲନା ହେମ ଘବ ପବ ବତେର / ଶ୍ରଦ୍ଧି ଜାଓ ଗଂଗା ସ୍ନାନ କହ ଶ୍ରାରୁ /  
 ସ୍ଵଷମାଜୀ ମନେ ମନ ସୋଚି ବତେନ ଛୁଣୀତ ଜେ ଚନ୍ଦ୍ର ଏକ-ଦ୍ଵଘ୍ରା ଦିନ ତହ  
 ଘବ ମେ ଶାନ୍ତି ବତେତ / ବୋତେନ କେ ସଂଭାନନାଘ୍ରା କୋନୋ ପେଘ ରାତ  
 ନାହି ଶ୍ରଦ୍ଧି / ମାଁଜୀ ଛୁଣ୍ଡିକ ଦିନ ସେହୋ ହେମବା ସ୍ଵତହ ନାହି ଦେତ ଛୁଣି  
 / ଶ୍ରାର ଦୁ ଦିନ ଦେବ ଧବି ସ୍ଵତର / ନୀନାଜୀ କେ ସାଁମ ମେ ଛୁଣେନ ଛୁନ  
 / ଦିନ ମେ ବୋତେନ କେ ସଂଭାନେତ ଶ୍ରପନ ଯାତ୍ରାକ ଡେସାବୀ କେନାଧି /  
 ସାଁମ ମେ ଛୁଣେନ ପକଡ଼ରାକ ନେନ ସ୍ଠେଶନ ଚାନ୍ତି ଏଣୀତ /

ଦୋସବ ଦିଶି ସ୍ଵଷମାଜୀ ଫୋନ ପବ ଶ୍ରପନା ମାଧ ସଂ ରାତ କବେତ  
 ଛୁଣୀତ ତଖନ ବୋତେନ ସ୍ଵତି ବତେନ / ବାତିକ ଭାନସ ରଂନନ ଛୁନ /  
 ସ୍ଵଷମାଜୀ ଭନସା ଘବ ଗେନୀତ ତହ ଦେଖେତ ଛୁଣିନ ଜେ ବାତିକ ଭାନସ

ଭେନ ଶ୍ରଦ୍ଧି / ଓ ଖାନା ଖା ନେନଥି / ଦେବ ବାତି ମ୍ଲନକବ ପତିଦେର  
 ଘବ ଏନାତ ତଲେନ ସ୍ଵଷମା ଜୀ ଗର୍ଲୀବ ନୀନ ମେ ଢୁନୀତ / ରିମ୍ଲତ ଘଣ୍ଟୀ  
 ରିଜେନାକ ରାଁଦ ଓଁନୀତ / ଶ୍ରଦ୍ଧନୀନେ କିରାଡ଼ ଖୋନନଥି /  
 ପତିଦେରକ ଏନାକ ରାଁଦ ସ୍ଵଷମାଜୀ ପୁଢୁନଥିନ - ଖାନା ଖାୟର ଗବମ  
 କହ ଦୀ ? ଏହି ପବ ଓ କଲେନି - ଖାନା ଗବମ ଭହ ଜାୟତ ତଲେନ  
 ନୀକ ବଲେତ / ଖାନା ଖା କହ ଓ ସ୍ଵତି ବଲେନାତ / ଥୋଡ଼େ ଦେବକ ରାଁଦ  
 ବୋଲେନ ଜୋବ-ଜୋବ ସଁ କାନହ ନାଗନ / ବାତି ମେ ଓ ଖାନା ଖା କେ  
 ନାହି ସ୍ଵତନ ଢୁନ ତାହି ସଁ ହୁଖେ ଓ କାନି ବଲେନ ଢୁନ / ଓନା ତହ ବୋଲେନ  
 ବାତି କେ ଦାଦୀ ନଗ ସ୍ଵତେତ ଢୁନ / ବାତି ମେ ବୋଲେନ କେ ଦୁଧ ଦେରାକ  
 ଜିମ୍ମେଦାବୀ ଦାଦୀ ପବ ଢୁନ, ସ୍ଵଦା ଶ୍ରାଞ୍ଜ ଦାଦୀ କେ ନାହି ବଲେନାକ  
 କାବଣ ଞ୍ଜ ଜିମ୍ମେଦାବୀ ସ୍ଵଷମାଜୀ ପବ ଶ୍ରାରି ଗେନ ଢୁନ / ସ୍ଵଷମାଜୀ  
 ଦୁଧ ଗବମ କହ ବୋଲେନ କେ ରୌତନ ଥମା ଦେନଥିନ / ବୋଲେନ ଦୁଧ  
 ପୀର ରିଢୁନା ପବ ଖେନହ ନାଗନ / ବୋଲେନ କେ ନାହି ସ୍ଵତନାକ କାବଣ  
 ସ୍ଵଷମାଜୀ ସେହୋ ନାହି ସ୍ଵତନଥି / ଭୋବରା ମେ ଫେବ ବୋଲେନ ସ୍ଵତନ

ତଳେ ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀ କେ ଟେନ ମିନନ /ତଳେ ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀ ସେହୋ ସୂତି  
 ବଲେନିତ୍, ସ୍ଵଦା ଥୋଡ଼େ ଦେବକ ରାଁଦ ଘବକ ଝଞ୍ଜି ରଞ୍ଜନ / ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀ  
 ଚିବଚିବା କହ ମନେ ମନ କଲେନିନ - ପତା ନାହି ଏତେ ଭିନସବେ  
 କେ ଢୁଆ ? ରିଢ଼ୋନା ପବ ସଞ୍ଜ ଓଠି କିରାଡ଼ ଖୋନନାଧି ତହ ଦେଖନାଧି  
 ଜେ ଦୂଧରାନା ଠାଡ଼ ଶୁଦ୍ଧି/ ଦୂଧ ନହ କେ ଚୁଲ୍ଲା ପବ ଗବମ ହୋସରାକ  
 ନେନ ବାଧି ଦେନାଧିନ / ଶ୍ଵା ରିଢ଼ୋନା ପବ ଶ୍ଵାରି ନେଠି ଗେନାଧି / ଚୁକି  
 ବାତି ମେ ଓ ନାହି ସ୍ଵତନ ଢୁନିତ୍ ତେ ମାନକା ନୀନ ଶ୍ଵାରି ଗେନ / ଯପକୀ  
 ନାଗେତ ଢୁନ କି ଦାଘ୍ରା ଘବକ ଝଞ୍ଜି ରଞ୍ଜେନକ / କିରାଡ଼ ଖୋନନାକ  
 ରାଁଦ ଯାଦି ଏନେନ ଜେ ଦୂଧ ଚୁଲ୍ଲା ପବ ବାଧନ ଢୁନ / ଭନସା ଘବ  
 ଗେନାଧିନ ତହ ଦେଖେତ ଢୁଆଧିନ ଜେ ଦୂଧ ଓରାଁନି କହ ଚୁଲ୍ଲା ପବ ଗିବନ  
 ଶୁଦ୍ଧି / ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀ ଦାଘ୍ରା ସଞ୍ଜ ଓ ସାଫ୍ କବେନାଧି / ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀ ସୁଁତ ଠାଧ  
 ଧୋ କେ ଚାସ ରାଁନା କହ ଘବରାନା କେ ଓଠେନାଧି / ସ୍ଵଦା ଓ କଲେନାଧି  
 - ହେ ଶୁଧନ ଚାସ ନାହି ପୀସର, ହେବା ଶୁଧନ ସ୍ଵତହ ଦିଶୁ, ଗ୍ରା କାହି  
 ଓ ସ୍ଵାତି ବଲେନାହି / ଓ ଶୁକେନେ ଚାସ ପୀର ଭାନସ ରାଁନସରାକ ନେନ  
 ତବକାବୀ କାଠେତ ଢୁନିତ୍ ତଧନ ବୋଲେନ ଜାଗି ଗେନ ଶ୍ଵା ଜୋବ ଜୋବ

सँ कानह नागन / तबकावी रँनेनाञ्ज छोट्टि स्वषमार्जी बोलन  
 के कोबा मे नेनखिन, मुदा ओ चुप नहि भेन / तहन बोलन के  
 कोबा मे नह के घुमारैत छनीह, तेयो ओ चुप नहि भेन /  
 एकव रँद स्वषमार्जी श्रपना घबराना सँ कहनखिन - स्वने छी ?  
 कनि रौंश्राके देखु हम एकबा नेन दनिया रँना दैत छी, ओ खा  
 नेत तहन चुप भह जायत / एहि पब ओ गससा सँ कहनखिन  
 - हमबा स्वतह दिश्व नीन नागन श्रुति / ञ कहि ओ स्वति बहनाह  
 / स्वषमार्जी बोलन के कोबा मे नेने भनसा घब मे श्रारि  
 दनिया रँनेनथि श्रा ओकबा खुश्रा देनखिन / तकव रँद स्वषमार्जी  
 तबकावी रँनारक नेन रँसनीह मुदा बोलन रँब-रँब न्नका  
 नग श्रारि तबकावी नहि काठह देनक /थोड़े देवक रँद  
 न्नकव घबराना उठनथि तह कहननि- चाय मिनत की नहि ?  
 स्वषमार्जी कहननि जे बोलन के देखु तहन हम चाय रँना दैत  
 छी / ञ कोनो काज नहि कबह दैत श्रुति / स्वषमार्जी चाय

ରଁନା କହ ଦେନଥିନ / ଏକବ ରାଁଦ ବୋହେନ ପୋଷ୍ଠୀ କେନକ ତାହି ନେନ  
 ସାଫ କବରାକ ନେନ ରାଁଥକମ ମେ ଗେନଥି / ବୋହେନ ତତେକ ହାଥ  
 ପାଞ୍ଚବ ମାବୈତ ଛନ ଜେ ଶ୍ଚକେନେ ସାଫ କବରା ମେ ରଁଡ଼ ପବେଶୀନୀ  
 ଭେନି / ବୋହେନ ଶ୍ଚା ସ୍ତ୍ରଷମାଜୀକ ସଭଠା କପଡ଼ା ଭୀଂଗ ଗେନ / ରାଁଥ  
 କମ ସଁ ରାଁହେବ ଶ୍ଚାରି ପାହିନେ ବୋହେନକ କପଡ଼ା ରଁଦନି ଦେନଥିନ ତକବ  
 ରାଁଦ ଓ ସ୍ନାନ କବହ ଚନି ଗେନୀହି / ବୋହେନ କେ ରାଁଥ କମ କେ ସୋମା  
 ମେ ରୈସା ଦେନଥିନ / ନହେନାକ ରାଁଦ ଘନକା ହୁଥ ନଗନନି, ସ୍ତ୍ରଦା  
 ଭାନସ ନାହି ରଁନନ ଛନ / ମୋରାଞ୍ଚନ ସଁ ଖାନା ଶ୍ଚାର୍ଡବ କେନି ତହେନ  
 ଖାନା ଖେନଥି / ତକବ ରାଁଦ ଘବକ କାଜ ମେ ଜୁଠି ଗେନୀହି / ଭବି  
 ଦିନ କୋନା ରୀତନ ତକବ ପତା ନାହି ଚନନ / ବୋହେନ କେ ପାଢୁ-ପାଢୁ  
 ନାଗନ ଧ୍ବବା ଦିନ ରୀତ ଗେନ / ସାଁମ ମେ ସ୍ତ୍ରଷମାକ ମାସ ସର ଦିନ  
 ଜକାଁ ହୋନ କେନଥିନ ସ୍ତ୍ରଦା ଘନକା ସମସ୍ୟ ନାହି ମିନନ ଜେ ହୋନ ପବ  
 ରାଁତ କବଥିନ / ହୋନ ଓଠା କହ ମାସ ସଁ କହେନଥିନ - ମାସ !  
 ଶ୍ଚାଞ୍ଚା ହେବ ସାସ୍ତ୍ର ମାଁ ନାହି ଛୁଥିନ, ଓ ଗଂଗା ସ୍ନାନ ଗେନ ଛୁଥି ତାହି ସଁ  
 ସମସ୍ୟ ନାହି ଶ୍ଚଢ଼ି ଜେ ରୈସୀ ରାଁତ କବର / ଶ୍ଚାଞ୍ଚା ପବେଶୀନୀ ରୈସୀ ଭହ

गेन श्रुति, दिन मे खाना सेहो नहि रँनेने छुनम्न / बोलेन के  
 श्रुता बलेन छु, ओ श्रुतत तलेन भानस होयत / बोलेन के श्रुता  
 कह श्रुममार्जी भानस केनथि / दूर प्राणी था बलेन छुनीह  
 कि बोलेन उँठि गेन आ कानह नागन / श्रुममार्जी खाना छोडि  
 बोलेन के कोवा मे नेननि आ पतिदेर सँ कहननि - श्रुताँ  
 पहिले खाना था निश्रु तलेन हम खाना थायर / घबराना के खाना  
 खेनाक रँद ओ खाना खेनीह / श्रुतह सँ पहिले ओ बोलेन के  
 खाना रँना कह थिनेनथि / बोलेन खाना खेनाक रँद रिँछोना  
 पब खेनह नागन / श्रुममार्जीक नाथ प्रयासक रँदम्न बोलेन  
 नहि श्रुतन / बाति के १२ रँजि गेन मुदा बोलेन नहि श्रुतन /  
 बोलेन के जागनाक कावण श्रुममा सेहो नहि श्रुतेत छुनीह /  
 कान्हि बाति सेहो उँग सँ नहि श्रुतन छुनीह / श्रार म्मनका  
 एहसास भेननि जे म्मनकब साश्र माँ कतेक कठिन सँ बोलेन  
 के नानन-पानन कबैत छुथि / दोसब दिन खेब रएह दिनचर्या

ଭେନ ଦ୍ଵଞ୍ଚା ଦିନ ମେ ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀ ପବେଶୀନ ଭହ ଗେନୀହି / ଦ୍ଵଞ୍ଚା  
ଦିନକ ରାଁଦ ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀ ଗଂଗା ସୁନ ସଁ ଏନୀହି ତଲେନ କ୍ଳନକା ଶ୍ଵାବାମ  
ମିନନ / ତକବ ରାଁଦ ସ୍ଵସ୍ଵମାଜୀ ଘବକ କାଜ ମେ ଚାଥ ରଞ୍ଜୀରହ  
ନାଗନୀହି /

ଶ୍ଵପନ ମତରା [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) ପବ ପଠାଓ /

୨.୬.ମନୋଜ ମା ସ୍ଵାଜି- କଥା-ନହ କେଶ



মনোজ মা মৃজি

কথা-নহ কেশ

গামমে শ্বফবা তফবী মচন ছে / ঘবঘবমে এতরে চর্চ ভবহন ছে  
জে শ্বারঁ কি হেতগ্ৰা ? রাঁতো ত ওহনে ছন / এহিসঁ পহিনে  
কহিয়ো এহন রিরাদ গামমে নগ্ৰা দেখন গেন ছনৈ /

কিছুদিনসঁ সামান্যরুপমে রিমাৰ বামানন্দ মিসবকে দেহান্ন শ্বাগ্ৰা  
ভিনসবমে ভেননি / রিরাদ এহি রাঁতক ছন জে বামানন্দ রাঁরুঁকে  
ম্বখাগ্নি কে দেতনি ?

মিসবজীক গন্নি গামক কহরেকামে হোঙত ছননি / নিম্ন  
মধ্যমরদ্ধীএ পবিরাবক হোঙতো জিন্নাভবিমে শ্বপন হঠনে  
পহিচান ছননি মিসবজীকেঁ / সন্নানকরুপমে দৃষ্ঠা রেঁষ্ঠা শ্বা দৃষ্ঠা  
রেঁষ্ঠা ছননি / ছোঁঠ রাঁনক শ্বনজাতিমে রিরাহ কএনে ছননি, ওহি  
রিরাহমে মিসবজী দূন্ন প্রাণী সহভাগি ভেন বহথি / শ্বা তকবে

ରଞ୍ଜନା ରଞ୍ଜନାରିକ ଜେଠ ରଞ୍ଜନକ ମାୟରଞ୍ଜନକ ନାମପବ ନହ କେଶି  
କବାନେନେ ବହନି, ନାତା ସମ୍ପତ୍ତି ମାୟରଞ୍ଜନକ ତୋଡ଼ି ନେନେ ବହନି ।

ଛୋଠକା ନନକିବରାକ ରିରାଟ୍ଟ ପତ୍ନିନୀ ଜେଠ ରଞ୍ଜନକକ ଜୀଦଦକେ  
ଦେଖେତ ଦୁଇ ରେଠାକେ ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା କଦେନେ ବହଥିଲୁ ମିସବଜୀ । ଜେଠ  
ରଞ୍ଜନକକ ଗ୍ରହଣା ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା ରିର ଜିଠକା ନିକାନନେ ଦୁଇ ରେଠାକ  
ନାମପବ ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା ସମ୍ପତ୍ତି କଦେନେ ବହଥିଲୁ । ଶ୍ରୀ ଗ୍ର ବଢ଼େକ ଜେ  
ସମ୍ପତ୍ତି ଦୁଇ ରେଠାକ ନାମପବ ଭେନାକ ରାଦୋ, ମିସବଜୀ ଦୁଇପ୍ରାଣୀ  
ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା ଧେତକ ଉରଞ୍ଜା ଧେତାହ ଶ୍ରୀ ଦୁଇ ରେଠା ପ୍ରତିମାସ  
ପାଞ୍ଚପାଞ୍ଚ ଶୋ ଠକା ତିମନତବକାବୀ ରାସ୍ତେ ଦେତନି । ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା  
ଜାହା ଭେନ ବଢ଼େକ ତାହା ଜେଠ ରଞ୍ଜନକ କୋନୋ ରିଦେଶୀ ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା  
କାଜ କବନି ଶ୍ରୀ ମୋଠ ପାଞ୍ଚ କାମାଞ୍ଜନ, ଛୋଠ ରଞ୍ଜନକ ରେବୋଜଗାବ  
ବହନି । ପାବିରାବିକ ପାନନପୋଷଣନେନ ମିସବଜୀଦୁବା ନେନେନ  
ରେଠାକ କର୍ଜକେ ସେହୋ ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା କସନଜଏରାକ ଜେଠ ରଞ୍ଜନକକ  
ପ୍ରସ୍ତାର ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା । ମିସବଜୀକ ଗ୍ରହଣା ରିପବୀତ ଛୋଠ ରଞ୍ଜନକ ଶ୍ରୀରଞ୍ଜନା

जेष्ठ त्राताक आकांक्षा अन्नकप मिसवजी द्वनूप्राणीके सहमतिमे  
 नारिं, कर्जक पाजयक रँदनामे खेत जेठका भायक नामपव  
 कहदेनकनि । छोट रँानकक रिराहकराद अपन हिससाक  
 खेतक उरँजा सेहो जेष्ठ रँानक अपने उठरँ नगननि आ  
 मायरँरँस नाता सम्रंध तोडि नैनकनि । अँशरँणुाक समयमे  
 प्रतिमास पाँचसो गड्डन ठका एकको मास जेष्ठ रँानक नञ  
 देनकनि । छोट त द्वनकासरँसगे बहिते छननि ।

मिसवजीक देहान्तक रँाद जेष्ठ रँानक कर्ताक ह्रमिका निर्ाह  
 कवरँानेन देहान्तक खरँवि अँनिते गामपव उपसथित भहगेन  
 बहनि । म्दा, छोट रँानक जेठकाके मिसवजीके मुखगि देरँाक  
 रँातसँ सहमत नञ भेननि आ ङ नौरत आएन छन ।

गामक किछु राजिक कहरँ छननि जे पिताके मुखगि देरँाक  
 अधिकार जेष्ठ रँानकके होगत छन्हि, ताँए जेष्ठ रँानकके

ସ୍ୱଖାଗ୍ନି ଦେରାସଁ କେଓ ନଞ୍ଜ ବୋକ ସକୈସ । ଏମ୍ବେ, ଛୋଠକା  
 ରାନକକେ ପ୍ରଶ୍ନ ସମାଜସଁ ଛନ, ୁଏକ୍କହି ରାଜି, ଏକ୍କହି ରାଜିକ  
 ନାମପବ କଏ ରେବ ନହ କେଶି କବୌତେକ ? ଜେ ଅପନ ଜିରିତେ  
 ବହନ ମାୟରାରୁଁକ ନାମପବ ଶ୍ରାଫ୍ କହ କହ ନହ କେଶି କବାନେନେ ହୋଏ,  
 ଓ ଓହି ମାୟରାରୁଁକେଁ ସ୍ୱଖାଗ୍ନି ଦେରାକ ଅଧିକାବୀ କୋନା ଅଞ୍ଜି ?୧

ଓନା ଜେଠ ରାନକଦ୍ୱାବା ମାୟରାରୁଁକ ନାମପବ ନହ କେଶି କବାଓନଗେନ  
 ରାତ ଗାମକ ଅଧିକାଶି ଗୋଠେକେ ରୁଁମନ ଛନି ।

ସ୍ତ୍ରନକ ପ୍ରାଁଗଣ ଗାମକ ନୋକ ଆ ରାଠ ଚନନିହାବସଁ ଧଚାଧଚ ଭବିଗେନ  
 ଛନ । କିଛୁଗୋଠେ ପବମ୍ପବା ଆ ସିଂସ୍ରାତିକେ ଦୋହାଞ୍ଜ ଦୈତ ଞ  
 ରିଚାବ ରାଜ କଧନନ୍ଧି, ୁମିସବଜୀକ ଜେଞ୍ଜ ରାନକ ଗନ୍ତୀ ତ କଧନକ  
 ସ୍ୱଦା, କି କବରୈକ ? ଅପନା ସମାଜମେ ସରୁଦିନସଁ ଜେଠେ ଧୁତ୍ର  
 ସ୍ୱଖାଗ୍ନି ଦୈତ ଅଏନୈସ, ତାଁସ ଜେଞ୍ଜେ ରାନକ ଏକବ ଅଧିକାବୀ ଅଞ୍ଜି

সরলক রাত স্বনিবহন মুখিযাজী মিসবজীক ছোষ্ঠ রানককে  
 স্বপন পঞ্চ বখরাক আদেশে দেনকনি / স্বপনা স্থানপব ঠাট  
 হোঙত মিসবজীক ছোষ্ঠ রানক সভকে সম্বোধন কবেত  
 কহনখি, এখনিধবি সমাজমে কেও কোনো জঘন্য গন্তী  
 কহনেনাক রাদ কি কবরৈ ? গন্তী ভেলে / মাফী মংগৌক /  
 আদি গ্ৰাহাদি কহেত সমাজমে গন্তী কযনে নোককে মাফী দেত  
 স্বএলে, তাঁএ গন্তী কযনিহাব একব ফায়দা উঠরৈত গন্তীপব  
 গন্তী কবেত স্বএন, স্বপন কর্তরাসঁ ম্বকবেত স্বএরাক  
 সঁস্কাবমে দিনান্দিন রঁড়োততবী হোঙত গেন / সমাজক  
 এহনে উদাব ভারক ফায়দা উঠরৈত সমাজ দ্বষিত ভহগেন স্বষ্টি  
 / জকবা জখন জে মোন নাগন ও স্বপবাধ কবেত গেন /  
 জীরিতমে কহিযো নূনধবিক স্বাগ্ৰহ নঞ্জ কযনে রৈঁঠা,  
 মাযরারুঁকে রিন্ব জিউকা নিকাননহী স্বাধা সম্পতি নহকহ নাতা  
 তোড়িননে রৈঁঠা, জিরীতেমে মাযরারুঁক শ্রাফ্ কহদেনে ঘোষণ

কবেত ❖নহ কেশ❖ কবৌনে র়েঁঠাক হাথসঁ ম্বখাগ্নি দেৱযৰাঁক  
 ৱাঁত জেসৰঁ কহবহনছী সে সমাজমে কেহন সঁস্কাব দেৱঁহ  
 চাহেত ছিযে ? সমাজমে গ্ৰা শ্ৰা এহন গন্তীকে মাফী দহ এহি  
 প্ৰকাবক প্ৰৱৃত্তিকে জোঁ প্ৰোসোহন কবৰাঁক কাজ হোঙত বহেটে  
 ত শ্বপ্পন হিহ্ৰসা নহকহ মাযৰাঁৱঁসঁ সন্ন্ব নগ্ৰা বখনিহাবক সঁখ্যা  
 ৱেঁঠেত❖ৱেঁঠেত সমাজসঁ মাযৰাঁৱঁকপ্ৰতিক ৱেঁঠাক কৰ্তৰাক ৱাঁত  
 ৱিনীন নগ্ৰা ভহজএতেক ? ভায শ্ৰা ৱাঁস ত ওহনে ৱেঁঠন বহৰাঁক  
 প্ৰগ্ৰতিএ ৱেঁঠেত ঙ্কে, ত ভাযসঁ মনমোঠাৰ ভহগেনাপব  
 মাযৰাঁৱঁকে শ্বনদেখী কবৰঁ কতেক উচিত ? এহন❖এহন  
 ৱেঁঠাকে পবম্পবাক নামপব মবনোপবান্ত ম্বখাগ্নি দেৱাক  
 শ্বধিকাব কিন্নন্ন নগ্ৰা ভেঠৰাক চাহী ।

ৱেঁসাবমে উপস্থিত শ্বধিকাঁশ নোকক থপড়ীসঁ স্হনক প্ৰাঁগণ  
 গড়গড়াগেন / মাহৌন পূৰ্ণকপেন শান্তিক চদবি ওতিনেনক /  
 কানাফুসীক শ্বনশ্বনাহেঁঠি ৱাতাৱবণমে কৌতহনতা শ্বানি দেনে ছন

/ हबकीपव चठन मिसवजीक अन्वयेष्ठीक समयमे सेहो रिंनम्  
 भहबलेन हुननि /

मृथियाजीके रैतक सहावा नेत ठाढ़ होगत देखि रातारवणमे  
 मौनता पसविगेन / सर्रकियो निष्प्राण जकाँ होगत  
 मृथियादिसँ ठँकठँककी नगाक देखहनागन / ठाढ़ भह मृथियाजी  
 कहहलगनाह, ूमिसवजी आ हुनका दनु रैँठाक खेवहा ०ना  
 सर्रके रीसो रर्रसँ रूमने अछि / सर्ररातके गौव कबैत, समय  
 आ समाजक मनोभारके देखैत हम जे निर्णयपव पल्लचनछी  
 से अपने सर्रकेक समझ बखैत छी / ० नमहव सूँसनेत मृथियाजी  
 अपन राँत आगु रँठयनाह, ० ०ना मृथाग्नि देराक अधिकार अपना  
 सर्रकेक संस्कारबमे जेष्ठे सन्तानके बलेन अछि / जेष्ठ सन्तानदुवा  
 जीरित मायराँसँगे ऋग्रह एरम् दूरारहाव कयनाकरादो  
 मृथाग्नि देराक पवम्पवाक नामपव जाहि प्रकारसँ आग्रधवि  
 माफी दैत समाज आएन अछि, तकवे कावण आञ्जक दिन

হমবাসরঁকে দেখহপড়ন ঞ্ছি / জে রঁেঠা জিরীত মাযরঁারঁুকে  
সেরা নঞ কবত, সমঁক্ষ নঞ বাখত, কোনো রঁেহ্নামে জিরীতে  
মাযরঁারঁুক নামপব শ্রাফ্ এরম্ ❖নহ কেশ❖ কবাওত ওহন  
রঁেঠা জেগ্ধে কিযা নঞ ঞ্ছএ, ম্বখাগ্নি দেরাক ঞ্ছধিকাবী নঞ  
রঁনাওন জাএ / এহন এহন ফঁসঁস্কাবী রঁেঠাকে জঁ এখুনকো  
সমযমে মাফ্ কযন জাএ ত সমাজমে জএহ সঁস্কাব রঁাঁচনখুচন  
ঞ্ছি তকবা রঁেচোনাঞ কঠীন হোএত / ঞ্ছতঃ মিসবজীকে ম্বখাগ্নি  
দেরাক ঞ্ছধিকাব জেগ্ধ রঁানক গমাচুকন হমব রঁুমাঞ ঞ্ছি /২  
এতেক কহেঁত চুপ্প ভহ ঠাড়ে বহ্নাহ ঞ্ছা স্হ্লক প্ৰাঁগণমে  
রঁেসন নোকসরঁদিস নজবি ঘুমাক দেখহ নগ্নাহ / প্ৰাঁগণমে  
উপস্থিত নোকসরঁ ঞ্ছপন কঠন ধুনীসঁ ম্বখিযাজীক ফঁেসনাকেঁ  
ঞ্ছনমোদন কএনক ঞ্ছা মিসবজীকেঁ ম্বখাগ্নি দেরাক ঞ্ছধিকাবী  
ছোঠ রঁানককে রঁনাওন গেননি /

ସ୍ୱପନ ମୂତରା [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) ପବ ପଠାଉ ।

ପତ୍ର

୩.୧. ଜଗଦାନନ୍ଦ ଯା ମନ୍ତ୍ର - ରିସିଠା ହାତୀ

୩.୨. ବରୀନ୍ଦ୍ର ନାବାସନ ମିଶ୍ର-ରିସିଠା ଜାଏଣ୍ଟ ଜକବୀ ଛେ

୩.୩. ସ୍ୱାମୀ ଜୀ- ଶ୍ରୀକରିତା- ଓ଼଼ାକ ମାଁପନକେଁ!

୩.୧. ଜଗଦାନନ୍ଦ ମା ମନ୍ତ୍ର - ରୀସିଠା ହାଞ୍ଞ



ଜଗଦାନନ୍ଦ ମା ମନ୍ତ୍ର

ରୀସିଠା ହାତୀ

୧

ଗବୀର୍ ଜନି

ହେବ ମୋନ ତୋବି

ଓ ହୈଁ ଛାଥି

୨

ପ୍ରେମମେ ଧୋଖା

ରଞ୍ଜିତେ ଖେନୌ ତମ

ରିଶ୍ୱାସ କେନେ

୩

ତବକା ମୋନେ

ଆଞ୍ଜ କାନ୍ତି ତମବା

ଓ ତକୈ ଛୁଧି

୪

ମୋନମେ ର଼ିସି

ହମବ ସ଼ିଗ ବ଼ହ

ଜନମ ଭବି

୭

ଆଧବ ଆଧି

ସ୍ବଧ ଦ୍ବଧ ଦେନକ

ପାଠି-ପାଠିମେ

୬

ସ୍ଵାଧିବ ସଂଗେ

ଜୀବିରଂ ସୀଧନଂ

ସ୍ଵାଧିବେ ମୀତ

୭

ସୀଧି ବୈ ପେନୌ

ଜୀରନକ ଶ୍ରାଧବ

ମବିତୋ ତକ

୫

ଶ୍ରାଧବ ସନ

ହେମବ କବେଜମେ

କେ ରୁଁସି ଗେନ

୬

ঐথিক জোত

চনি গেন হমব

প্ৰেম তৰ্কেমে

১০

ঐথব জনি

নঙ্গ নঙ্গ পহু নে

মোন হমব

୧୧

ନିଧି ଦିଅଁ ନେ

ହେବ ମୋନ ପବ

ପ୍ରେମ ଶ୍ରୀଧର

୧୨

ସ୍ଵପ୍ନ ପବ ଛେ

କବେଜାକ ସିନେହ

ସ୍ଵସ୍କୀ ରିନି କହ

୧୩

ଦ୍ଵିଧା ସ୍ଵଧର୍ମେ

କବେଜାମେ ବୁକୋନେ

ରୌପକ ଚୁପ୍‌ସୀ

୧୪

ଦର୍ଦ୍ଦ ସହିତୋ

ଜେ ନହି କାନ୍ଦି ସକେ

୧୪ || ରିଦେ ୪୩୫

ଓ ତଁ ରାଁପ ଛେ

୧୭

ନାଖୋ ଧର୍ଚା କ

ଜେ ସ୍ୱାନ୍ କର୍ତ୍ତା ମେ

ରେଞ୍ଚିକ ରାଁପ

୧୬

ଜୀରନ ଭବି

ସ୍ବକୋନି ନୋବକେଁ

ଦର୍ଦ୍ଦ ସହିତୋ

୧୧

ରାତ୍ନେକ ଖୁଶୀ

ଦୂର ହୋରେକ୍ ଦର୍ଦ୍ଦ

ଭବନ ଶାନ୍ତି

୧୫

ଆଜ ରୁମନୌ

ରେଖି ରିଦାଞ ରାଦ

ରାପକ ଦର୍ଦ

୧୯

ରୁମର କୋନା

ଞ ନେକ ଦବେଗ

ରିଞ୍ଚୋଟ ରିନା

୨୦

ଜିୟନ ଜେ ନୈ

ପ୍ରେମ କେବ ଜୀରନ

ଓ ରିନ ପ୍ରାଣ

-ଜଗଦାନନ୍ଦ ମା ✨ମନ୍ତ୍ର଼, ମୋଂ ନଂ ୯୨୧୨-୫୭-୧୦୦୭

ସ୍ଵପନ ମିତରା [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) ପବ

ପଠାଓ/

୩.୨.ବରୀନ୍ଦ୍ର ନାବାଞ୍ଚ ମିଶ୍ର-ରିସବି ଜାଏର୍ ଜକବୀ ଡେ



ବରୀନ୍ଦ୍ର ନାବାଞ୍ଚ ମିଶ୍ର

ରିସବି ଜାଏର୍ ଜକବୀ ଡେ

ଢୋଡ଼ି ଦିଅ ଚିତା

ମୋନକେଁ ଶ୍ରାବୀମ ଦିଓଁ

ଚାତକ ସଂଗ ବୌଦମେ

ଭୋବୁକା ଶ୍ରୁଧରୀବ ପତୁ

କୋନୋ ସ୍ଵରୀନ ଦୋସ୍ତକେଁ

ହୋନ ନଗାଏନ କବ

ରିସବନ ରୀତ ସଭ

ଶ୍ରୀତବଗ ପ୍ରସଂଗସଭ

ଚେନସଁ ରୀତିଆଏନ କବ

କଧନୋ-କଧନୋ

ଛୁଞ୍ଚି ମନାଏନ କବ

ଆଞ୍ଜ-କାନ୍ତ କବେତ

ଜିନଗୀ ରୀତା ଦେନମ୍ନ

ଜେ କେନମ୍ନ, ନାହି କେନମ୍ନ

ତକବ କୋନ ହିସାର୍ ଛେ

ରିସବି ଜାଓ ପ୍ରବାନ ରୀତ

ମୋନକେଁ ଓସାସ ଦିଓ

ନହଁ-ନହଁ ଗୀତ

ଘନଘନାଏନ କକ

କখনୋ କାନ

ଆବାମୋ କଏନ କକ

ଏକ ପବ ଏକ

ଦ୍ଵନିଆମେ ପସବନ ଛେ

କକବା କୀ ଛେ

ତକବ କୀ ମାନେ ଛେ

ଜେ କିନ୍ତୁ ପ୍ରାପ୍ତ ଅଛି

ରଂମତ ମୁନାରାନ ଡ଼େ

କଥୁକ ନେ ଶ୍ରୀତ ଡ଼େ

ଜୀରନମେ ଡ଼ୋଠ-ପେଘ

ସଭକ ସ୍ଥାନ ଡ଼େ

ସ୍ବଧୀ ବହରାକ ନେନ

ସଂତଞ୍ଜି ଜକବୀ ଡ଼େ

ଜୀରନମେ ଶୀତି ନେନ

ସଂତୋଷ ଜକବୀ ଡ଼େ

ଢୋଠ-ମୋଠ ରାତ

ରିସବି ଜାଏର ଜକବୀ ଡେ

ରାର୍ଥକ ଶଂକାସ

ଅନାରଥକ ଚିତାସ

ସଦିଧନ ରଠେତ ବହ

ମୋନକେଁ ହନ୍ଧକ କବ

ଜାହିସ ନିଚେନ ବହେ

ଅନନ୍ଦ ରନନ ବହେ

से काज अरुसस कक

जीरन रूड ठोठुं ठे

हंसि कए रितरैत बह

मबरूक तँ ठेहे

मविओ कए नाम बहए

तेहनो किहु

जीरिंते कबैत बह

-बरून्दिब नावायण मिश्र, १७/०४/२०२४ (२/२७ प्रातःकान)

লেখক পবিচয়ঃ

নাম : বরীন্দ্র নাবাযণ মিশ্র

পিতাক নাম : সুন্দীয় সূর্য নাবাযণ মিশ্র

মাতাক নাম : সুন্দীয়া দযাকাশী দেরী

জন্ম তিথিঃ ২ জনরবী ১৯৩৪(প্রমাণ পত্র)

২৪ ঞ্গস্তু ১৯৩২(জন্মপত্র)

পেত্রক গ্রাম : ঞ্গডেব ডীহ

মাতক : সিন্ঘিখা ডোতী

রুতি : ভাবত সবকাবক ঙপ সচির (সেরানিরুতত)/

স্পেশন মেট্রোপোনিঠন মজিস্ট্রেট, দিন্নী(সেরানিরুতত)

ଶିକ୍ଷା : ଚନ୍ଦ୍ରଧାବୀ ମିଥିନା ମହାରିଘ୍ନାନୟସଁ ରୀ.ଏସ-ସୀ. ଭୌତିକ

ରିଘ୍ନାନୟେ ପ୍ରତିଘ୍ନା : ଦିନ୍ନୀ ରିଶୁରିଘ୍ନାନୟସଁ ରିଧି ସ୍ନାତକ

ଶ୍ରୀ ବରୀନ୍ଦ୍ର ନାବାୟଣ ମିଶ୍ରକ ପ୍ରକାଶିତ ଘ୍ରତି :ୟୈଥିନୀୟେ:-

ପ୍ରକାଶନ ରର୍ଷ:2017

୧. ❖ଭୋବସଁ ସାଁନ ଧବି❖ (ହ୍ନାୟେ କଥା), ୨. ❖ପ୍ରସଁଗରସଁ❖  
(ନିରଁଧ), ୩. ❖ସୁନ୍ନା ଏତହି ଶ୍ଠି❖ (ୟାତ୍ରା ପ୍ରସଁଗ),

ପ୍ରକାଶନ ରର୍ଷ:2018

୪. ❖ଫସାଦ❖ (କଥା ସଁଗ୍ରହ) ୫. 'ନୟନ୍ତ୍ରଷ୍ଟୈ❖ (ଓପନ୍ୟାସ) ୬.  
ରିରିଧ ପ୍ରସଁଗ (ନିରଁଧ ) ୭.ୟହବାଜ(ଓପନ୍ୟାସ)  
୮.ନଜକୋଠବ(ଓପନ୍ୟାସ)

ପ୍ରକାଶନ ରର୍ଷ:2019

୧. ସୀମାକ ଓଡ଼ି ପାବ(ଓପଗ୍ରାସ) ୧୦. ସମାଧାନ(ନିର୍ମୂଳ ସଂଗ୍ରହ)

୧୧. ମାତ୍ରହୁମି(ଓପଗ୍ରାସ) ୧୨. ସୁପ୍ନନୋକ(ଓପଗ୍ରାସ)

ପ୍ରକାଶନ ବର୍ଷ: 2020

୧୩. ଶଂଖନାଦ(ଓପଗ୍ରାସ) ୧୪. ଓଏଚ୍ ଥିକ ଜୀରନ(ସଂସମବଳ)

୧୫. ଠଟେତ ଦେରାନ(ଓପଗ୍ରାସ) ୧୬. ପାଥେସ(ସଂସମବଳ)

ପ୍ରକାଶନ ବର୍ଷ: 2021

୧୭. ଚମ ଶ୍ଵାରି ବଲ୍ଲ ଛା଼ି(ଓପଗ୍ରାସ) ୧୮. ପ୍ରନୟକ ପବାତ(ଓପଗ୍ରାସ)

ପ୍ରକାଶନ ବର୍ଷ: 2022

୧୯. ରୀତି ଗେନ ସମୟ(ଓପଗ୍ରାସ) ୨୦. ପ୍ରତିରିକ୍ଷ(ଓପଗ୍ରାସ) ୨୧. ରଦନି

ବଲେ ଶ୍ରଦ୍ଧି ସଭକିତ୍ତୁ(ଓପଗ୍ଗାସ)22. ବାଞ୍ଛବ ମଂଦିବ(ଓପଗ୍ଗାସ) ୨୩.  
ସଂଯୋଗ(କଥା ସଂଗ୍ରହ) ୨୫. ନାଚି ବଲେ ଛନି ରସ୍ବଧା (ଓପଗ୍ଗାସ)

ପ୍ରକାଶନ ରର୍ଷ:2023

୨୭.ଦୀପ ଜର୍ବେତ ବହ଼(ଓପଗ୍ଗାସ) ୨୬.ଠେତା ପବକ  
ମୌନାଧନ ଗାଢ଼(ଓପଗ୍ଗାସ) ୨୭.ପଠାଞ୍ଚେପ(ଓପଗ୍ଗାସ)

ପ୍ରକାଶନ ରର୍ଷ:2024

୨୮ ମାଠି଼ି ରଞ୍ଜା ବଲେ ଶ୍ରଦ୍ଧି(ଧାତ୍ରା ପ୍ରସଂଗ) ୨୯ ଜଧତ  
ଜାନକୀ(ଓପଗ୍ଗାସ)

୩୦ ଧଜ୍ଜସେନୀ(ଓପଗ୍ଗାସ)

ପ୍ରକାଶନ ରର୍ଷ:2025

३१. कथा अखन रौकी अडि(संसुवण) ३२. गडु रँडेते  
डेक(कथा संगुह) ३३. सुर्यपुत्र(डुपगुस)

*In English: -*

*Year of publication: 2018*

*1. The Lost House (Collection of short stories)*

*2. Life is an art*

*3. The Ganges Whispers (English translation of my  
Maithili Novel, Ham Aabi Rahal Chhee (हम आरि बलन डी)*

हिन्दी में ❖

प्रकाशन ररुष: 2019

१. गाय की गुलब

114 || रिदेह ४३४

शुपन मंतरा [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) पव

पठाड/

३.३.मना जी- शकरिता- उघाक माँपनकेँ!



ସ୍ତ୍ରୀ ଜୀ

ଶ୍ୱକରିତା- ଓଘାକ ମାଁପନକେଁ!

ଚୁପ୍ପେ ,କିଏ ଧୌଁମାଞ ଛୀ ହେବା ପବ

କିଏ କନଧିଆଞତ ଗବୌନେ ଛୀ ନଜବି

କ' ଦେଁ ଛୀ ଶ୍ୱାବୋପିତ ଶ୍ୱର୍ଣ୍ଣ ସରଁ ହେବା

ଞ କହି ଜେ ଶ୍ୱର୍ଣ୍ଣ ଛ୍ତ୍ରୀ ରିବୋଧୀ ଛୀ।

ଧୌ,ହେ ମାତ୍ର ଗଢ଼ନି ନେଁ ଗଢ଼େଁ ଛୀ,ରୁଁମନିଧୌ

ହେ ତ' ଓଠକସରୈଁ ଛୀ ଶ୍ୱର୍ଣ୍ଣ ସରଁକେଁ

ସନକରୈଁ ଛୀ ସରଁ ଜନୀ ଜାତିକେଁ

ଜିନକ ଶ୍ୱାଞ୍ଚବ ଚନେଁଏ ଶୈଳ୍ପ ସଂଯୋଜନମେ

ରଞ୍ଜିତ ରୈବ କହନୌଁ ଜେ-

ଛ୍ତ୍ରୀ ଜନ୍ମ ରାତକେଁ ଜିଁ ନେଧକ ନିଧତାହ

ତହନ ଓ ମାତ୍ର ମାତ୍ର ଭାରାଞ୍ଚ ହେତେ

जं नेथिका निखती ?

तलन ओ पूर्णतः भोगन यथार्थ हेते/

हम त'

ठारठ खोनि रँठरँक श्वाह्लान कवे छी

सरँके ओग ठठिअन जिनगी सँ

ने जानि कनम उठाओयो धखाओ छी श्वर्ण

दोसब स्त्री केँ नर दृष्टि, रँठ देखेराँ सँ

धाख जकवी छे,साख रँचेराँ नैन

पहिनै किशोबीक गेम छन कित कित,गोठबस....

श्वरँ रेँधडक भ' खेनाओए

निर जन सँ पेयब कुरँ धवि/

धाखक तब त' ओ दरँअन वहे छनखिन

तेँ रँराँ श्वा दाओक श्वधवतियाक पहड़मे

দরঁনে পএবেঁ হুকি হোজন য়গ্গম দর্শন

তখনো ধীয়া- প্বতা সঁ ঘব ভবন/

শ্বা, শ্বারঁ...!

সঁরৈধানিক, সামাজিক জোড়া রঁনে সঁ পহিনে/

কতেকো রঁেব কতেকো সঁগ

নাগি জাগন্ত জোড়, প্রতিস্পর্ধা চানু...

শ্বলী কনেঁ শ্বরবোধক ভ' শ্বজমাউ নেঁ

রিষম নৈঁগিকতা প্রগ্রতি প্রদত্ত শ্বঙ্টি

সামাতা গ্রত্রিম কার্য রহন মাত্র

তহন উঁকস- পাকস সঁ উঁফোন কিএ?

কক প্রদর্শন শ্বপন শ্বস্তির জোগা

শ্বপন কনেরবক সঁগ!

পাক নরঁকা ডবীব ,নিখু শ্বলী উঁঘাবি

ओ सरँठी मीपन रीतकेँ

जे श्वलकेँ बखनक ठठिया

श्व निशँज रँनारकेँ!

कनमक धारकेँ पिजाड , रँनाञ्ज धवगव।

श्वपन मँतरा [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) पव

पठाड।

*4.1.Changing Thoughts, Diminishing Hope-Jagdish Prasad Mandal (Original Maithili Short Story)  
Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)*

*4.1.Changing Thoughts, Diminishing Hope-Jagdish Prasad Mandal (Original Maithili Short Story)*

*Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)*



*Jagdish Prasad Mandal (Original Maithili Short Story)*



*Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)*

## *Changing Thoughts, Diminishing Hope*

*Thoughts grow, and with them hope and faith grow as well. Just as they rise, they can also diminish. When one's thoughts incline toward the good, toward noble ideas, hope and faith flourish. When they drift toward the base, toward ignoble ideas, hope and faith wither. Yet such a measure does not come easily to a person, for people rarely grasp the nature of events as they unfold. The reason is simple: human beings are prone to confusion. In confusion, the good may appear bad, and the bad may seem good.*

*In the village of Katharbouni, the family of Hridaynath had long been counted among the most prosperous and respected households, not only in the present day but for a full century past. Still, they were not considered the original inhabitants of the village, for Hridaynath's great-grandfather had come from outside to settle there. His ancestors had arrived from the west, from Bhojpur, and made Katharbouni their home. For three generations, up to the time of*

*Hridaynath's grandparents, the family spoke only Bhojpuri. After settling in Mithila, the later generations gradually began speaking Maithili.*

*Hridaynath's great-grandfather Krishnanand had served as a soldier in the Darbhanga estate. Even in that humble post, his mind was sharp and discerning, qualities that won him the estate's trust. Later, Krishnanand was appointed Kamatia, the overseer of a vast tract of three thousand bighas of estate land. The responsibility for cultivation and upkeep rested on him, while collection of land revenue was handled by the Patwari, Mukund. As chance would have it, both Mukund and Krishnanand hailed from the same region and shared the same caste. In time, they became related by marriage, with one's son marrying the other's daughter.*

*Quarrels and reconciliations were nothing new to the Mithila region, and Katharbouni was no exception. With funds from the estate, Krishnanand had a three-bigha pond dug, and on the eastern embankment of that pond he built his home. The estate's courthouse stood elsewhere, but the presence of that pond brought prestige to Krishnanand's family, raising them to the ranks of the village's honored households.*

*Time changed. The grandeur of the Darbhanga estate faded into memory.*

*Hridaynath was a sociable man, free even of the slightest trace of prejudice over the fact that his family had come from the west to settle here while the original inhabitants of Katharbouni were from other lineages. Like a native-born son of the soil, he*

*took an active part in community affairs, whether funerals, weddings, or any public or religious event, offering his presence and assistance, which strengthened his social bonds. Being from a well-to-do household and also educated, he was regarded as one of the prominent figures of the village.*

*With his sound financial footing, he also engaged in the trade of grain and water, including moneylending and interest-based transactions. Most of the native families of Katharbouni had suffered repeated losses from floods and river erosion, forcing them to part with their lands and properties. As a result, the majority of villagers became poor and worked as sharecroppers to survive. Until that time, Hridaynath's heart had not hardened enough to provoke social opposition; he continued to treat the natives with fairness. Yet he was well aware that his family stood apart in this place, having come alone from elsewhere to settle here.*

*Hridaynath had one son and three daughters. The daughters were married in the Bhojpur-Ara region of the west, but for his son's marriage he resolved to choose a bride from Mithila. The reason was that by marrying into a Maithil family, the household would absorb Maithil customs into its own traditions, and relations with the Maithil community would deepen.*

*His son Manoj was a very intelligent and hard worker. He passed the matriculation examination in first division. Although a commerce student, his grasp of other subjects too was strong, and this helped him secure a good result. He enrolled at C. M. College for the Intermediate in Commerce, and alongside his regular classes, took private tuitions from college teachers. The reason for these tuitions was to build his backing, a network of connections.*

*With honors, Manoj completed his B.Com. in first division. While he was still pursuing his degree, Hridaynath began speaking of his marriage. In his*

*mind was the wish that, just as his son was well educated, so too should his bride be educated.*

*Mithila remained, in many ways, unchanged. Men's education had long been valued, but women's education still lagged behind. Fortune favored them; a proposal came for a B.A.-educated girl, and the talks for Manoj's marriage began.*

*The practice of dowry was not confined to Mithila alone; it existed everywhere. Yet here it had a certain distinction, since dowries were not uniform in value or form. In some castes the amounts were high, while in others they were relatively modest. For example, a B.A.-educated groom from one caste might command a far higher dowry than a similarly educated groom from another caste. Manoj belonged to a higher caste, so the expected dowry was naturally greater. After negotiations, the marriage was settled with an agreed dowry of thirty lakh rupees in cash.*

*Following the agreement, Manoj was married to a B.A.-*

*educated young woman named Sheela. As in other marriages, family ties began to form between the two households, and the bond between Manoj and Sheela also grew. Along with the wedding came the custom of Duragaman, the ceremonial arrival of the bride at her husband's home. In earlier times this would take place in an odd-numbered year after the wedding, one year, three years, or five years later. With changing times, Duragaman began to occur alongside the wedding itself, as was the case for Manoj and Sheela.*

*Being a commerce graduate, Manoj secured a job as an accountant in the state's finance department.*

*As a government employee, his salary was fixed according to official scales. In the modern climate, however, private-sector salaries, whether from domestic or international companies, often surpassed government pay. Manoj was on the lookout for better opportunities and was eventually offered an accountant's position in an international firm. Resigning from his government post, he joined the private company.*

*The salary was generous, and the benefits impressive. Two years passed quickly. During that time Manoj and Sheela were blessed with a daughter.*

*Up to this point, their married life resembled that of most couples, ordinary in its outward harmony.*

*Yet beneath the surface there was a quiet rift between them. In Manoj's mind was the ingrained belief in a husband's authority, while in Sheela's mind was the memory of the thirty lakh rupees her father had given as dowry. Sheela held to the notion that her father had, in effect, purchased her husband, whereas Manoj viewed the dowry as a customary social arrangement. Sheela's father, Yogeshwar, was an inspector in the state police, while Manoj's father, Hridaynath, was a prosperous farmer of high standing.*

*In Delhi, Manoj worked while living with his family. The company had provided them with accommodation. Yet Sheela did not treat him in the manner most Maithil wives treated their husbands. All household chores were left entirely to the maid. Manoj could see that Sheela lacked the warmth and attentiveness expected of a wife, but since their marriage appeared outwardly like any other, he kept his feelings to himself and endured it.*

*Life, however, has its own rhythm. Everyone wishes for a warm and trusting bond between husband and wife so that the family can live in peace. To lessen the restlessness in his mind, Manoj began drinking alcohol. Sheela noticed this change in her husband's habits. She was aware that drinking altered a person's behavior, and she could see this difference in Manoj, yet she chose to remain silent and bear it quietly. Being the daughter of a police officer, Sheela also had a strong belief that she could earn her own living if necessary.*

*Observing his wife's manner, Manoj began to feel inwardly despondent. He often thought that his married life, which was meant to uphold both family responsibilities and social standing, should have been peaceful. He wished for a home where the years ahead, with children and parents together, would be filled with harmony, but he felt this was not happening.*

*The demands of Manoj's job in the international company left him with little sense of time. His workload continued to grow. The office had its own canteen, so he often left home early in the morning and returned late at night. Disheartened by his wife's attitude, he began spending more and more time away from home.*

*Five years after their wedding, the rift between Manoj and Sheela had grown so deep that they no longer wished to see each other.*

*Eight days before the Chhath festival, Manoj said to Sheela- ❖ This year we will celebrate Chhath in the village. ❖ Sheela readily replied- ❖ That would be wonderful. ❖*

*Manoj then said- ❖ When we go to the village, we will take all the festival items and clothes for my parents as well. Tomorrow we will finish all the shopping. ❖*

*The next morning Manoj and Sheela set out for the market with their four-year-old daughter walking between them. Manoj had drunk heavily. Sheela walked in front, the child beside her, while Manoj followed behind. At a narrow bend in the road, a truck approached from behind. As it came close, Manoj pushed Sheela. She fell beneath the rear wheels, and her life ended instantly.*

132 || ରିଦେଲ ୫୨୫

ପଠାଉ /

४

